વૈદિક જ્યોતિષ સંસ્થાન (રજી.)

Reg. No. Bombay Public Trust Act Vide Registration No. E-26475 (Mumbai)

121/44-D, Vishwakunj CHS., Sector-1, Charkop, Kandivali (W), Mumbai - 400 067.
Web. : www.vedicjyotishsansthanmumbai.com Email : vjtvv1@gmail.com

ગુરુ પૂર્ણિમા મહોત્સવ Guru Purnima Mahotsav

SUNDAY 13TH JULY 2025

VEDIC JYOTISH SANSTHAN (REGD.)

Classes in Gujarati & Hindi Medium

Our Centers : Borivali (Sat.) • Malad (Sun.) • Borivali (Mon.)

परमेश

६- त्रिपुरभैरवी

क्षीयमान विश्वके अधिष्ठान दक्षिणामूर्ति कालभैरव है। उनकी शक्ति ही त्रिपुरभैरवी है। ये ललिता या महात्रिपुरसुन्दरीकी रथवाहिनी है। ब्रम्हाण्डपुराणमें इन्हें योगिनियोंकी अधिष्ठात्री देवी के रुपमें चित्रित किया गया है। मत्सपुराणमे इनके त्रिपुरभैरवी, कोलेशभैरवी, रुद्रभैरवी, चैतन्यभैरवी तथा नित्यभैरवी आदि रुपोंका वर्णन प्राप्त होता है। इन्द्रियोंपर विजय और सर्वत्र उत्कर्षकी प्राप्तिहेतु त्रिपुरभैरवीकी उपासनाका वर्णन शास्त्रोंमें मिलता है। महाविद्याओंमें इनका छठा स्थान है। त्रिपुरभैरवीका मुख्य उपयोग घोर कर्ममें होता है।

इनके ध्यानका उल्लेख दुर्गासप्तशतीके तीसरे अध्यायमें महिषासुर-वधके प्रसंगमें हुआ है। इनका रंग लाल है। ये लाल वस्त्र पहनती हैं, गलेमें मुण्डमाला धारण करती हैं और स्तनोंपर रक्त चन्दनका लेप करती हैं। ये अपने हाथोंमें जपमाला, पुस्तक तथा वर और अभय मुद्रा धारण करती है। ये कमलासनपर विराजमान हैं। भगवती त्रिपुरभैरवीने ही मधुपान करके महिषका ह्यदय विदीर्ण किया था। रुद्रयामल एंव भैरवीकुलसर्वस्वमें इनकी उपासना तथा कवचका उल्लेख मिलता है। संकटोसे मुक्तिके लिये भी इनकी उपासना करने का विधान है।

घोर कर्म के लिये कालकी विशेष अवस्था जनित मानोंको शान्त कर देनेवाली शक्तिको ही त्रिपुरभैरवी कहा जाता है। इनका अरुण वर्ण विमर्शका प्रतीक है। इनके गलेमें सुशोभित मुण्डमाला ही वर्णमाला है। देवीके रक्तलिप्त पयोधर रजोगुणसम्पन्न सृष्टी-प्रक्रियाके प्रतीक है। अक्षयजपमाला वर्णसमाप्रायकी प्रतीक है। पुस्तक ब्रम्हविद्या है, त्रिनेत्र वेदत्रयी है तथा स्मिति हास करुणा है।

आगम ग्रन्थोंके अनुसार त्रिपुरभैरवी एकाक्षरुप (प्रणव) हैं। इनसे सम्पूर्ण भुवन प्रकाशित हो रहे हैं तथा अन्तमें इन्हींमें लय हो जायँगे। 'अ' से लेकर विसर्गतक सोलह वर्ण भैरव कहलाते है तथा क से क्ष तकके वर्ण योनि अथवा भैरवी कहे जाते हैं। स्वच्छन्दोद्योतके प्रथम पटलमें इसपर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। यहाँपर त्रिपुरभैरवीको योगीश्वरीरुपमें उमा बतलाया गया है। इन्होंने भगवान् शंकर को पतिरुपमें प्राप्त करनेके लिये कठोर तपस्या करने का दृढ निर्णय लिया था। बड़े - बड़े ऋषि-मुनि भी इनकी तपस्याको देखकर दंग रह गये। इससे सिध्द होता है कि भगवान् शंकरकी उपासनामें निरत उमाका दृढ़निश्चयी स्वरुप ही त्रिपुरभैरवीका परिचायक है। त्रिपुरभैरवीकी स्तुतिमें कहा गया है कि भैरवी सूक्ष्म वाक् तथा जगत्के मूल कारणकी अधिष्ठात्री है।

त्रिपुरभैरवीके अनेक भेद हैं, जैसे सिध्दिभैरवी, चैतन्यभैरवी, भुवनेश्वरीभैरवी, कमलेश्वरीभैरवी, कामेश्वरीभैरवी, षट्कूटाभैरवी, नित्याभैरवी, कोलेशीभैरवी, रुद्रभैरवी आदि।

सिध्दिभैरवी उत्तराप्राय पीठकी देवी हैं। नित्याभैरवी पश्चिमाप्राय पीठकी देवी हैं। इनके उपासक स्वंय भगवान् शिव हैं। रुद्रभैरवी दक्षिणाप्राय पीठकी देवी हैं, इनके उपासक भगवान् विष्णू हैं। त्रिपुरभैरवी के भैरव वटुक हैं। मुण्डमालातन्त्रानुसार त्रिपुरभैरवीको भगवान् नृसिंहकी अभिन्न शक्ति बताया गया है। सृष्टी में परिवर्तन होता रहता है। इसका मूल कारण आकर्षण- विकर्षण है। इस सृष्टीके परिवर्तनमें क्षण-क्षणमें होनेवाली भावी क्रियाकी अधिष्ठातृशक्ति ही वैदीक दृष्टीसे त्रिपुरभैरवी कही जाती हैं। त्रिपुरभैरवीकी रात्रिका नाम कालरात्री तथा भैरवका नाम कालभैरव हैं।

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

Acharya Ashokji
President - Hon. Trustee
(Jyotishalankar)

Harilal Malde
Hon. Principal

Varsha Raval
Hon. Vice Principal

Jayesh Waghela
Hon. Lecturer

Nitin I. Bhatt
Hon. Lecturer

Tejas Jain
Hon. Lecturer

Pramila Panchal
Hon. Lecturer

Priti Thakar
Hon. Lecturer

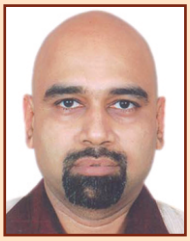

Dr. Himanshu Vyas
Hon. Lecturer

Vivek Shah
Hon. Lecturer

Rupal Damania
Hon. Lecturer

Swapnil Kotecha
Hon. Lecturer

Vikash Mishra
Hon. Lecturer

Himanshu R Oza
Hon. Lecturer

Anand Upadhyay
Hon. Lecturer

"श्री"

"गुरु + पूर्ण + माँ"

सर्व प्रथम माँ ही पूर्ण गुरु है,

तत्पश्चात गुरू ही पूर्ण माँ है।

हमारे जीगन में गुरू का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान होता है। धर्म शास्त्रो में भी कहा गया है, कि "बिन गुरू के तो ईश्वर भी नहीं मिलता है!"

"बलिहारी गुरू आपकी, गोविंद दियो दिखाय।" सनातन धर्म में गुरू की महिमा का बखान भिन्न-भिन्न स्वरुपो में किया गया है। इसी कड़ी में आषाढ शुक्ल पूर्णिमा को गुरू पूर्णिमा का विशेष पर्व मनाया जाता है। व्यास पूजा के इस पवित्र दिवस पर संस्कृति के घडवैयों का सम्मानसहित पूजन होता है।

महर्षि वेद व्यास की रचित महाकाव्य महाभारत ग्रंथ को "पाँचवा वेद" की उपमा दी गई है। भागवान श्री कृष्ण ने स्वयं अपने विविध स्वरूपों की बात करते हुए महर्षि वेद व्यास जी के प्रति अपना आदर दर्शाया है।

"मुनिनामप्यहम् व्यासः (भ.गीता-अ.१०-श्लोक ३७) "ज्योतिष सीखो, स्व और सर्व का कल्याण करो" इसी मूल मंत्र को सार्थक करते हुए हमारी प्यारी वैदिक ज्योतिह संस्थान (रजि.) सन २००९ (२००१) से अविरत ज्ञान दान करते करते आज अपना सुनहरा सत्रहवाँ साल पूर्ण कर रही है। ज्योतिषशास्त्र स्वरज्ञान, हस्तरेखा व वास्तुशास्त्र जैसे हमारे ऋषिओंकी धरोहर समान अनमोल विषयों में मुंबई शहर में एक सम्माननिय सीमाचिन्ह कायम किया है। संस्था से जुड़े हम सभी सदस्यों को इस संस्था का पारिवारिक सदस्य कहलाते हुए हर्ष अनुभव होता है।

"गुरु है शिक्षा का सागर, गुरु बाँटे ज्ञान बराबर"

वैदिक ज्योतिष संस्थान के प्रेरणास्त्रोत व संस्थापक आचार्य श्री अशोक गुरु जी को नतमस्तक प्रणाम। आपको और संस्था में कार्यरत सभी मानद् अध्यापक मित्रों को प्यारा सा धन्यवाद करते हुए गर्व महसुस हो रहा है। आदरणीय श्री हिरेनभाई भावसर सर जी तथा श्री प्रदीपभाई जोषी जी, उनके ज्ञानसभर योगदान के लिए सदैव आभारी रूप से स्मरण में रहेंगे। सत्रह सालों से अथक कार्यरत हमारी संस्था समय के चलते और अधिक विकासशील बने, प्रगति के पथ पर ऊत्तरोत्तर आगे बढ़े ऐसी हार्दिक शुभकामनाओं के साथ...

हरी ॐ

- वर्षा धीरज रावल

योगेन चित्तस्य पदेन वाचां, मलं शरीरस्य च वैद्यकेन।
वोडपाकरोत्तमं प्रवरं मुनीमां, पतंजलि प्राग्जलिरानतोडस्मि।।

''हरी ॐ''

संस्था परिचय

वैदिक ज्योतिष संस्थान का मूल उदेस्य आज के आधुनिक युग मे ज्योतिष तथा वास्तु शास्त्र को पहले के जीतना ही आदर पात्र बनाना एंव ज्योतिष तथा वास्तु शास्त्र को जीवंत रखना तथा निस्वार्थ भावना से यह शास्त्रो का प्रचार व प्रसार करना है।

आज के युग मे यह ज्योतिष तथा वास्तु शास्त्र दोनो ही शास्त्रो को ऐसी निम्न कक्षा की गीनती पर लाकर खडा किया गया है की शास्त्र के रचयीताओ ने कल्पना भी नही की होगी ऐसी अवहेलना ईस युग मे हो रही है, लोग ज्योतिष तथा वास्तु शास्त्र मे विश्वास रखते ऐसा बताने मे भी जीजक अनुभव करने लगे है, लोग अपने को पिछडा समज लेगें यह डर रहता है, गुप्तता रखना चाहते है, शर्म का अनुभव करते है, आखीर क्यो ? क्योकि हम हमारी मूल संस्कृति से विमूख हो रहे है, संस्था लोगोके मानसपटल पर से उपरोक्त सारी झुठी गलत फहमी भेद-भरम तथा डरका निर्मूलन करने का निस्वार्थ प्रयास के साथ साथ लोगोको ज्योतिष तथा वास्तु शास्त्र के निर्मल ज्ञान प्रदान करने का ज्ञान यज्ञ चलाती है।

आज के युग में ज्योतिष तथा वास्तु शास्त्र से लोगो की आपेक्षा इस तरह बढ़ गई हे की जैसे आपकी समस्याओ का तुरंत निकाल, हाथो हाथ निकाल, तुरंत निवारण, लोगो को इन सारी अंधश्रद्धा से, पूर्वाग्रहो से बाहर लाना है । एलोपथी दवाई गोली लेते ही दर्द गायब, इस मानसिकता से लोगो को बाहर लाना है।

वैदिक ज्योतिष संस्थाने ज्योतिष तथा वास्तु शास्त्र का जो अभ्याषक्रम बनाया है वह वास्तव मे एक प्रकार के गणित की गणना तथा विज्ञान ही है, संस्था का यह अभ्याषक्रम पौराणीक द्रष्टांतो एवं उदाहरणो द्वारा अत्यंत सरल पद्धति से पढाया जाता है, यहा ज्योतिशास्त्र, वास्तुशास्त्र तथा स्वरज्ञान के विस्तृत अभ्याषक्रम ज्ञान दान की नि:शुल्क सेवा संस्था के मानद अध्यापको के द्वारा दी जाती है। किसी भी उम्र के ज्ञान पिपांसु एवं जीज्ञासु बंधु भगिनीयो को सहृदय आमंत्रण दीया जाता है। वर्षांत परिक्षाए लेकर प्रमाण पत्र दीया जाता है। यह शास्त्र हमे वेदो के द्वारा मिली हुई अमुल्य धरोहर है, वरदान है, न जाने हमारे भारत वर्ष के ऋषीमुनि योगीयो की कितने युगो युगो के परिश्रम का यह निचोड है इस अमृतरुपी रस का पान करे, ज्योतिष शब्द का अर्थ क्या है ? इस की ज्योत का प्रकाश इस प्रकाश के उजाले से स्वत: तथा लोगो के जीवन में उजाला लाना है।

मानद अध्यापकगण

श्री. आचार्य अशोकजी

श्री. हरिलाल मालदे, श्रीमती वर्षा रावल, श्री. जयेश वाघेला, श्री. नितीन भट्ट, श्री. तेजश जैन,
श्रीमती प्रमिला पंचाल, श्रीमती प्रीती ठाकर, डॉ. हिमांशु व्यास, श्री. विवेक शाह, श्रीमती रूपल दमणीया,
श्री. स्वप्नील कोटेचा, श्री. विकास मिश्रा, श्री. हिमांशु ओझा, श्री. आनंद उपाध्याय

www.vedicjyotishsansthanmumbai.com

શ્રી નિરંજનભાઈ જોશી
૧-૧-૧૯૨૭ થી ૧૩-૧૦-૨૦૧૪

શ્રી ગુરૂવર્ય

સૌરાષ્ટ્રના પ્રખ્યાત કેળવણીકાર અને સુપ્રસિદ્ધ શ્રી ઈશ્વરલાલ કરશનજી જોશી અને લક્ષ્મીબહેનને ત્યાં તા. ૧-૧-૧૯૨૭ ના રોજ ડેડાણ ગામે અર્વાચીન યુગના જ્યોતિષ ભાસ્કર શ્રી નિરંજનભાઈનો દ્વિતીય પુત્ર તરીકે જન્મ થયો. જરૂરી શિક્ષણ ગુજરાતમાં પુરૂ કરી ૫૦ના દાયકામાં મુંબઈ આવી અર્થોપાર્જન માટે પ્રવૃત્તી શરૂ કરી અને સાથે સાથે જ્યોતિષવિદ્યાની સાધનાની શરૂઆત કરી. પિતાશ્રી શ્રી ઈશ્વરલાલભાઈના સિદ્ધાંતોને પોતાના જીવનમાં સ્થાન આપી નિર્ણય કર્યો કે ''જ્ઞાનની પરબ હોય, વિદ્યાનું વેચાણ નહીં'' અને સન ૧૯૫૬ માં ચોપાટી પર આવેલ મરીના મોર્ડન' સ્કૂલમાં જ્યોતિષ શાસ્ત્રના નિ:શુલ્ક વર્ગો શરૂ કર્યા. એક જ ભાવના અને ખેવના સાથે કે ભણ્યા બાદ વિદ્યાર્થીઓ ધંધો કરશે તો પણ માર્ગદર્શક બનીને. પણ કમસેકમ લેભાગુ અને થરવાર્થી જ્યોતિષોની જેમ સમાજને ગેરમાર્ગે તો નહીં દોરે. ચાર દાયકાથી વધુ તેમણે કરેલા આ જ્ઞાનયજ્ઞમાં ૪૫,૦૦૦થી વધુ ભાઈબહેનો જેમાં સામાન્ય માનવીથી માંડીને વૈજ્ઞાનિક, ડોક્ટરો, વકીલો અને નિવૃત્ત ન્યાયાધીશોને જ્યોતિષ જાણતા અને માણતા

કર્યા. કોંક્રીટના જંગલ જેવા મુંબઈ શહેરમાં અઠવાડિયાના દરેક દિવસે કેન્દ્રમાં વર્ગ અને રવિવારે ત્રણ કેન્દ્રમાં વર્ગ જેમાં કામા હોલ, ગીરગામ, પ્રેમપુરી આશ્રમ, સાંતાક્રુઝ, મલાડ, બોરીવલી, માટુંગા, મુલુંડ અને ઘાટકોપર સામેલ હતાં.

જ્યોતિષશાસ્ત્રના પ્રસાર અને પ્રચાર માટે આજીવન ભેખ ધારી ૯-૯ કેન્દ્રમાં પોતે જ ભણાવેલ વિદ્યાર્થીઓના સાથ સહકાર લઈ યોગ્યતા પ્રમાણે અધ્યાપક નીમિને અવિરત જ્ઞાન પ્રસાર, પ્રચાર અને સમાજસેવા, માર્ગદર્શનનું જ્વલંત ઉદાહરણ કદાચ આવતા અનેક વરસો સુધી જોવા નહી મળે.

આજીવન નિ:સ્વાર્થ અને ભેખધારી નિષ્ઠાવાન વ્યક્તિત્વને શત શત વંદન.....

"संदेश"

वैदिक ज्योतिष संस्थान के अध्यक्ष श्री अशोक चौहाण गुरु पूर्णिमा महोत्सव के उपलक्ष्य में स्मरणिका का प्रकाशन कर रहे है। गुरु पुर्णिमा महोत्सव के दिन ज्योतिष्य के छात्रों को मेडल एवं सर्टीफिकेट प्रदान कीये जाएँगे। वैदिक ज्योतिष संस्थान का अपना ही एक विशेष स्थान है। यह स्मरणिका झील का पथ्थर साबित होगी। इसमे व्यवहारिक ज्ञान, ज्योतिष का होगा जोकी सरल शब्दो में आमजन तक पहुँचाया जायेगा। यह वास्तविक तथ्यों पर आधारित होगा।

हम आशा करते हैं कि इस स्मरणिका के माध्यम से ज्योतिष के विद्यार्थी अपनी बहु आयामी प्रतिभा प्रदर्शित करने के लिए आगे आऐंगे।

स्मारिका के सफल प्रकाशन तथा वैदिक ज्योतिष संस्थान के उज्वल भविष्य के लिए ढेर सारी शुभकामनाए।

हमे खुशी है की वैदिक ज्योतिष संस्थान द्वारा जनमानस में ज्योतिष को लेकर फैल रही भ्रांतिओं को दूर किया जा सके। हम इसकी सफलता हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाए प्रेषित करते है।

हीरेन भावसार - पूर्व प्रिंसिपल
प्रदिप जोशि - पूर्व व्याख्याता
नितिन भट्ट - पूर्व व्याख्याता

Chief Guest

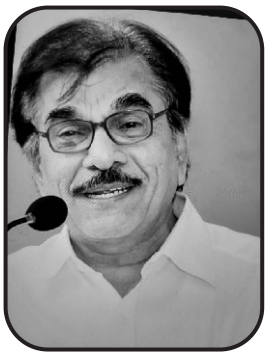

Shreeman D.K. SOMAN

Astronomer, Panchangkarta

Date of Birth : 21-05- 1942

Education: Textile Graduate

Professional Career: 25 years of Employment with Mafatal Textile Mills.

- ❖ Preparing panchang Din Darshika for past 54 years.
- ❖ Writing continuously for newspapers for the past 60 years
- ❖ He has given more than 9000 Lectures on astronomy.
- ❖ Participated in programmes of Aakashwani, Door Darshan and other channels.
- ❖ Written books on Aakash Darshan, Dhumketu, Lunar and Solar Eclips, Our Festivals and Our Celebrations. etc.
- ❖ Trustee of the Thane Marathi Library.
- ❖ President of the Marathi Science Council.
- ❖ Shreeman Soman was the Organiser of the literary conference held in Thane City.

Awards received by Mr. Soman

- ☛ Thane Bhushan Award
- ☛ Outstanding Science Preacher Honors
- ☛ Lokmat Thane Icon Award Rotary Club Vocational Award.
- ☛ State Astronomical Society Life Time Achievement Award
- ☛ Rotary Club Vocation Award
- ☛ Sate Astronomical Society Life time Achivement Award

શ્રીમતી સ્મિતાબેન આર. પારકર અનાવીલ બ્રાહ્મણ કુટુંબમાંથી આવેલ છે. એમણે એમ.એ. તથા M.Ed. કરેલ છે. તેમના જીવનનો મુદ્રાલેખ છે કે શાળા એ મંદિર છે તથા શિક્ષણ આપવું જે પુજા-આરાધના છે. તેઓ લગભગ ૧૮ વર્ષ સુધી શિક્ષિકા તરીકે સેવા આપી ચુક્યા છે. વિધાર્થીઓને માર્ગદર્શન આપી એમને આગળ વધતા જોઈ ગર્વ અનુભવે છે, એમનું જીવન ધ્યેય છે કે દેશનું દરેક બાળક-બાલિકા શિક્ષિત હોય, શિક્ષણનો પ્રકાશ સર્વત્ર ફેલાય, શિક્ષા ક્ષેત્રે ૧૮ વર્ષની સેવા આપ્યા બાદ તેઓ સરકારના એજ્યુકેશન ઈન્સ્પેક્ટર (શિક્ષણ ક્ષેત્રે તપાસકર્તા) તરીકે ૬ વર્ષ સેવા આપી, આ દરમ્યાન તેઓને વિધાર્થીઓની સમસ્યાઓનો સારો એવો અનુભવ થયો અને તેમની ઉત્કૃષ્ઠ સેવા તથા અનુભવને કારણે સરકાર દ્વારા મોટી જવાબદારી આપવામાં આવી જે (શિક્ષણ વ્યવસ્થા) એજ્યુકેશન સુપરીટેન્ડન્ટ તરીકેની હતી. અહીં તેમણે પોતાની કાર્ય સાધકતા, કાર્ય સમતા, સમર્થતાનો ઉત્કૃષ્ઠ પરિચય આપ્યા બાદ નિવૃત્ત થયા, પરંતુ બીજા લોકોની જેમ નિવૃત્તિ બાદ શાંત બેસવું એમના સ્વભાવમાં ન હોવાને કારણે તેઓ સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાયના મહિલા વિભાગમાં કાર્યરત રહે છે. તે ઉપરાંત તેઓ કુમારીકાઓ તથા યુવતીઓના સુધારા, પ્રગતી, શિક્ષણના લાભાર્થે કાર્ય કરનારી સંસ્થાના પ્રમુખ પદની જવાબદારી પણ સંભાળે છે. વેદિક જ્યોતિષ સંસ્થા તેમની આ સેવામય સફરમાં હંમેશા આગળ વધવાની શુભેચ્છા આપે છે અને ઈશ્વર તેમને આ કાર્યમાં હંમેશા આગળ વધવાની શક્તિ પ્રદાન કરે અને આપણી સંસ્થાના ગુરૂપૂર્ણિમા સમારોહના માનવંતા મહેમાન બનવાનું આમંત્રણ સ્વિકારવા બદલ આભાર વ્યક્ત કરે છે.

લગ્ન જીવનમાં એકબીજાને ગમતું કરો

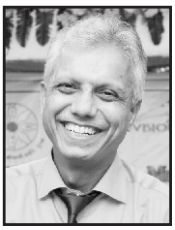

આજનો દિવસ ગમે તેવો ગયો હોય, પરંતુ આવતીકાલ ગમે એવી જવી જોઈએ, માટે બીજાને ગમે તેવું કરો.

चार वेद, पुराणमें बात मिली है दोई।

सुख दीने सुख उपजे, दुःख दीने दुःख होई।

લગ્ન માટે મહત્વની વાત આપણે લગ્નના દ્રષ્ટાંતથી સમજીએ. જ્યારે આપણે લગ્નમાં જઈએ છીયે ત્યારે બુફેમાં આપણે થાળીમાં આપણી ગમતી વસ્તુઓ લઈએ છીયે અને પ્રેમથી ખાઈએ છીયે. ખાતી વખતે કદાચ જો તે વસ્તુ ચાખ્યા પછી પસંદ ન આવે તો એને ખાઈ જ લઈયે છીયે, કારણ એ આપણે પસંદ કરીને લીધી હતી.

એવી જ રીતે પતિ પત્ની એકબીજાને પોતાની મરજીથી પસંદ કરે છે. લગ્ન પછી કોઈકવાર એવું બને કે આપણે લીધેલા નિર્ણય ખોટો પડે, તો જેવી રીતે લગ્નમાં થાળીમાં પીરસાઈ ગયું હોય અને ન ભાવે તોય આપણી સંસ્કૃતિ પ્રમાણે આપણે જમી લેતા હોઈએ છીયે. એ જ રીતે લગ્ન જીવનમાં પણ જેવું પાત્ર મળે તેવું સ્વીકારી લેવું.

લગ્ન જીવનના અમુક વર્ષ થાય પછી આપણે પતિ પત્નીએ એકબીજાની છાપ મનમાં પાડી દીધી હોય છે અને તેનાથી આપણી અંદરની ઉદાસીનતાને અસંતોષને દૂર કરવા ક્યારેક પણ આપણે એકબીજા સાથે બોલવાનો કર્મ કરવાને વ્યવહાર કરો તો પહેલેથી જ નક્કી કરી રાખો કે આ મારું માનશે જ એની કોઈ ગેરેંટી નથી. શાંતિથી વિચાર કરીએ તો ખબર પડશે કે પતિ પત્નીએ એકબીજા પ્રત્યે કોઈ મોટી ફરમાઈશ હોતી નથી. એ શું ઈચ્છતા હોય છે કે આ કપડા પહેરો, આ ચપ્પલ ખરાબ છે, આ રીતે બેસો. માટે વારંવાર બોલીને કંટાળી જવાથી બધાની વચ્ચે ટોકશે તો સારું નહી લાગે. આવા નાના કારણસર જ આટલું સુંદર લગ્ન જીવન દુ:ખી થઈ જાય છે. જો એને સારું નહીં લાગતુ તો મારે એવું નહીં કરવાનું તો એ પણ ગમતુ કરશે. તમે કોઈનું ગમતું કરશો તો એ ગમતું કરશે

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

Well Wishers

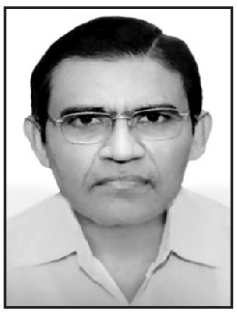

Dilip N. Gala

Jayesh Desai
Souvenir Editor

Apurva R. Parekh
Web Adviser

Kiran Shah

Nilay Chaubal
Web Designer

Purna Vyas
Astronomy Team

Kunal Vora
Astronomy Team

Vivek Patil
Astronomy Team

Manish Panchal

Umesh Bhatta

Parth Pandya

Ronak Trivedi

Viral Mehta

Kamlesh Gandhi

શબ્દકોશમાં માત્ર માનો શબ્દાર્થ મળશે, માનો ભાવાર્થ તો હૃદયકોશમાંજ મળશે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

Winner of the Silver Medal for Excellence

CHITRA B DAMANI
Vedic Hastrekha Vignata
1st Year

SUBHANGI S MANDOLKAER
Vedic Jyotish Pravesh
1st Year

AJAY S PARMAR
Vedic Vastu Pravesh
1st Year

MAHESHKUMAR D PARMAR
Vedic Jyotish Bhushan
2nd Year

DEVANG B DAMANI
Vedic Vastu Bhushan
2nd Year

NIRMALA K VYAS
Vedic Jyotish Martand
3rd Yr.

VANDANA S MISHRA
Vedic Swargyan Gnyata
Vedic Nibandh Spardha 2024

સુખ ઇચ્છાઓને સીમિત કરવામાં છે, તને તૃપ્ત કરવાની કોશિશ કરવામાં નહિ. આંતરિક અને બાર્હિક.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - SATURDAY

AARTI H SOLANKI

ALPA D PAREKH

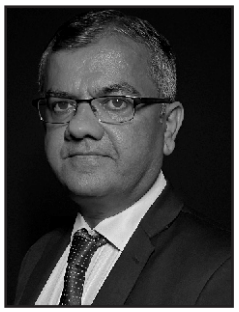
ALPESH G MEWADA

ARTI A CHAUHAN

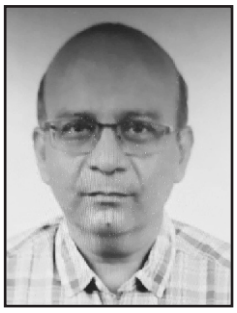
BHAVEN M PAREKH

BINAL N DESAI

DEEPIKA H DAVE

HEENA M BHARAKHDA

HETAL A DHARAIYA

HITESH T SONDAGAR

JAYSHREE S SANGHRAJKA

JIGISHA B MODI

KALPANA B JADAV

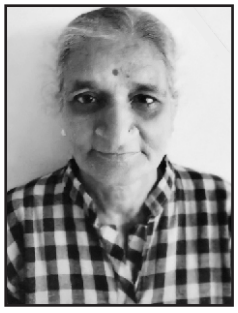
KOKILA A MEHTA

MAHESH B MEHTA

MAMTA M RAJA

જે પોતાની જાતને સુખી માનતો નથી, તે ક્યારેય સુખી હોતો નથી.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - SATURDAY

MANSI P SHUKLA

MANSI R SHAH

NEHAL H JHAVERI

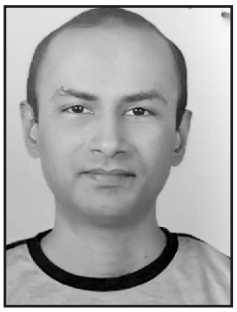
NISHIT K MATHURIA

PARINA J SHAH

PIYUSH G PAREKH

PRANALI K SHAH

PRITI A MEHTA

RAJVI M RAJPOPAT

SANGEETA D MISTRY

SHRADDHA A MISHRA

UDDHAV P JOSHI

VAIBHAV B KOTHARI

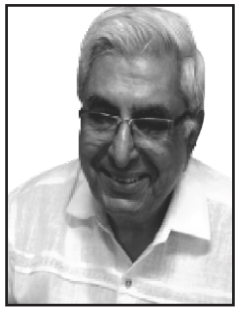
VINOD P MEHTA

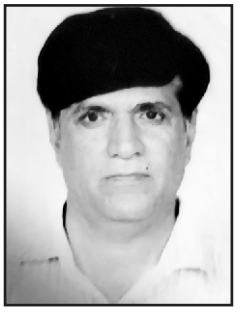
YOGESH G VYAS

જે મનુષ્ય પોતાના નિશ્ચયમાં દ્રઢ અને અટલ હોય તે જ મનુષ્ય દુનિયાને પોતાની રીતે બદલી શકે છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - SECOND YEAR - SATURDAY

AMISHI R DOSHI

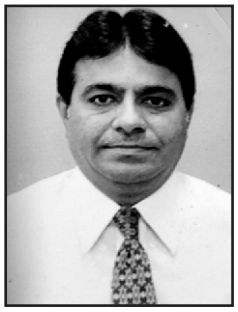

ANIL J PATHAK

CHIRAG R MEHTA

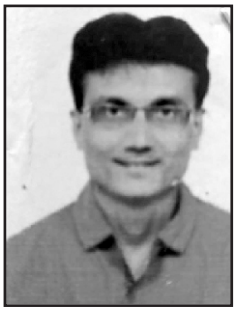

DEEPAK V RAVAL

PARUL M PATEL

REENA H GOHIL

RUPAL N DOSHI

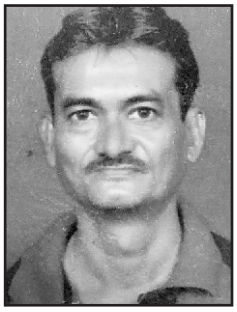

SUNIL G DANDULIYA

VARSHA N SUTARYA

VINOD R SIDHPURA

ZALAK A LIMBACHIYA

બધી જ કલાઓમાં જીવન જીવવાની કલા બેસ્ટ છે, સારી રીતે જીવી જાણે એ જ સાચો કલાકાર.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - THIRD YEAR & SW - SATURDAY

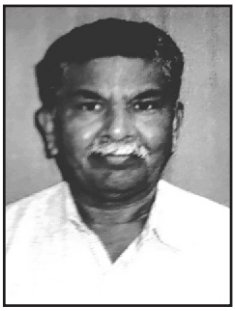
BHADRESH K SHAH

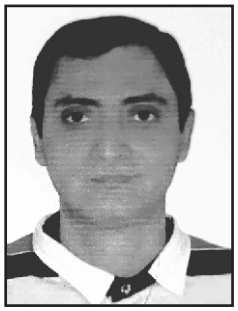
BHAVIK J SANCHALA

CHHAYA V CHHEDA

DEVANG B DAMANI

DISHA D MANDAVIA

GUNJAN R SACHDEV

HEMLATA H MUDLIAR

HETAL R BHATT

JIGNA J VORA

JIGNASHA N PARIKH

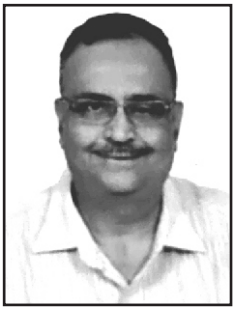
JITENDRA K PANCHAL

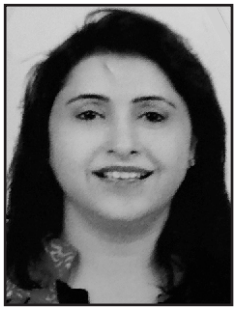
KAJAL A THAKKAR

KETAKI B GALA

KRUNNAL C PARMAR

MADHAVI D KAPSE

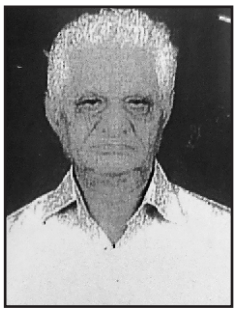
BHAGWANDAS N MEHTA

બધી જ કલાઓમાં જીવન જીવવાની કલા બેસ્ટ છે, સારી રીતે જીવી જાણે એ જ સાચો કલાકાર.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - THIRD YEAR & SW - SATURDAY

MAMTA D KAMDAR

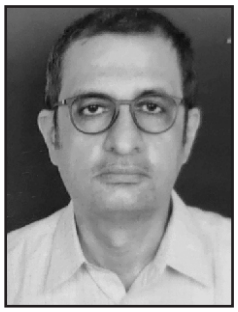

POURUSH B GUTTA

VIRAL B GANDHI

YASHVI PANCHAL

RITA N SHAH

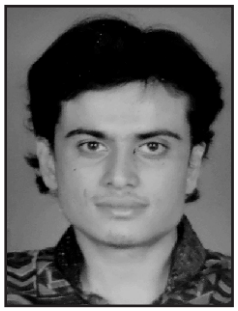

KEVAL H SHAH

PRITI F SHAH

SONAL N CHIKANI

વખાણના ભૂખ્યા માનવીઓ એ સાબિત કરી દે છે કે તેઓ યોગ્યતામાં કંગાળ છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - MALAD

AMIT H VADHEL

ANURADHA K CHAMPANERI

BHARTI A PATEL

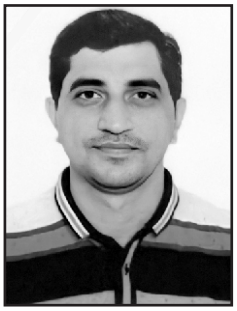
BHAVESH V DALAL

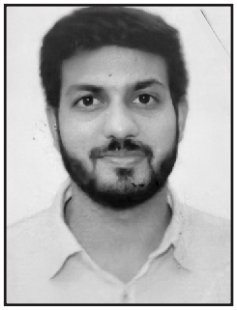
BHAVIK V SHETH

BIJAL V DALAL

CHETANA H PARMAR

DEEPA S PARMAR

HEMA J UPADHYAY

JIGNESH D MEHTA

JIGNESHA J PATEL

KALPESH M BHANUSHALI

KAMLESH H RATHOD

KARTIK K SAHA

KEVAL J GALA

MADHAV M GOHIL

સ્વાર્થને અંકુશમાં રખાય અને ઉચ્ચ સ્નેહમાં મગ્ન થવાય ત્યારે જ માનવજીન સંપૂર્ણ બને છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - MALAD

NIMISHA J PATEL

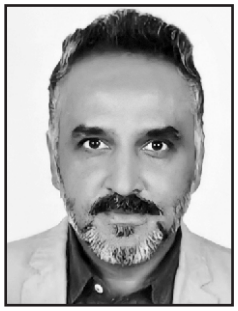
NIPUL C PANCHAL

PARTH D RAVAL

PUNAM N MAJITHIA

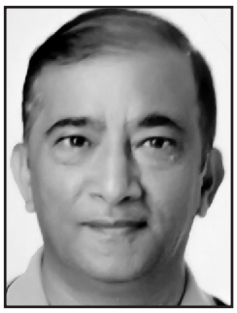
RAJENDRA K SHAH

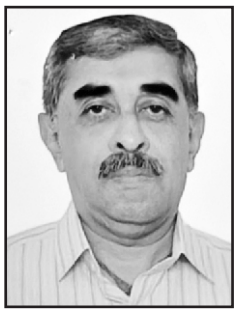
SANJAY N SAIYA

SHEETAL H SHAH

SUNITA N PANCHAL

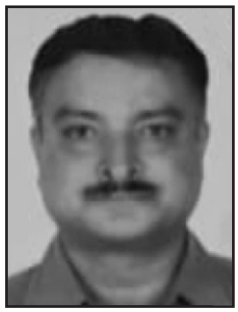
NILESH H JOSHI

ॐ
महामंत्र

ધર્મ-ધર્મ-મિત્ર અને પત્ની આ ચારેયની પરીક્ષા વિપત્તિના સમયે જ થાય છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - SECOND YEAR - MALAD

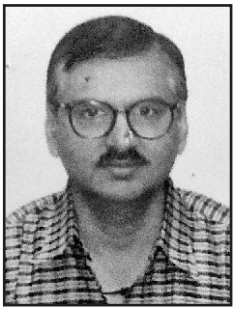
DEEPAK K RAVAL

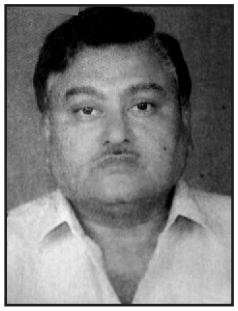
HEMANT C SHAH

HETA V VADGAMA

JAYSHRI V GALA

GAURAV A DESAI

RESHMA D SHAH

RUPESH S DOSHI

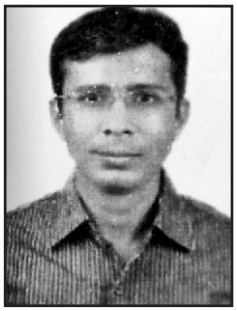
NISHIT J PAREKH

NARESH B PARMAR

PAYAL V PARMAR

VIKASH P VADGAMA

VILAS R PARMAR

KALPESH G DAVE

તમારા જીવનનું એક લક્ષ્ય બનાવો અને પછી તમારાં શારીરિક અને માનસિક બળને પૂરેપૂરા કામે લગાડી દો.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - THIRD YEAR - MALAD

AJAY S PARMAR

AMITA M NAIK

ANISHA M SONI

ANITA M DHAKAN

CHETANA H PARMAR

DHANRAJ P BHADARK

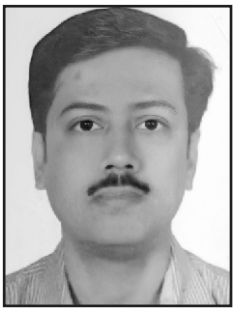

JATIN R DESAI

KAUSHIK N DAVE

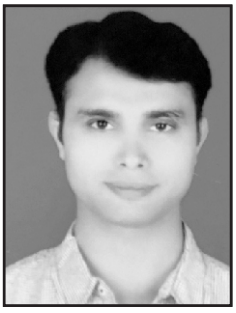

MAHESHKUMAR D PARMAR

MOHIT A SHAH

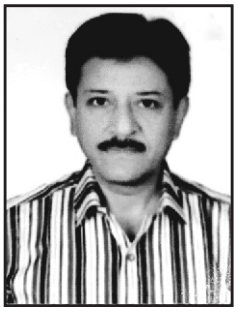

NIKHIL J KOTHARI

NUTAN I SHAH

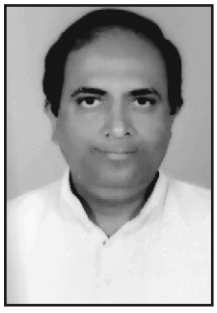

RAJEN R VYAS

SARIKA R SONI

SNEHAL V SHAH

URMISH P DESAI

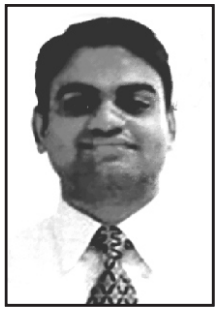

VIRAL V SHAH

અચાનક અને અતિઝડપે ભેગુ કરેલું ધન ઘડીકમાં ચાલ્યુ જાય છે જ્યાર ક્રમિક રીતે આવેલુ ધન વધતુ જાય છે.

OUR ARDENT STUDENTS - SW - MALAD

AMISH M SHETH

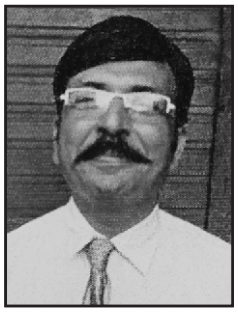

PRASHANT D BADHEKA

YOGESH U KHATRI

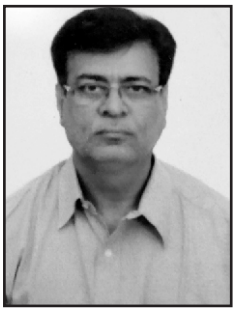

HIMANSHU J JOSHI

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - MALAD HINDI

AJAY S AGRAWAL

AMANKUMAR AGNIHOTRY

ANITA A MISHRA

ARPIT D SHAH

ASHA B GAGGAR

ASHISH H MAHESWARI

ASHISH S YADAV

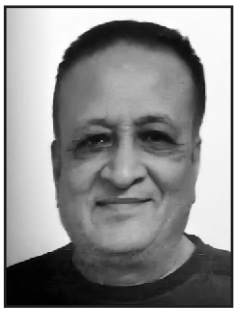
BHAGWATIPRASAD N GUPTA

BHAWANISHANKAR D SHARMA

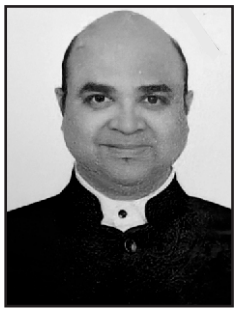
BHUSHAN K SINGH

CHETAN S TIWARI

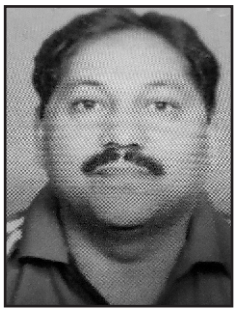
DEEPAK N RANE

DHANASHREE P VYAS

DHEERAJ R PANDEY

HETAL N KHANDELWAL

KALPANA A KARAN

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - MALAD HINDI

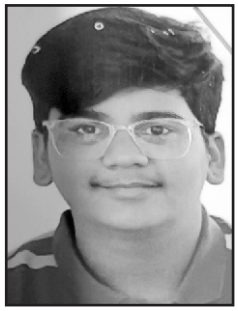
KESHAV D JOSHI

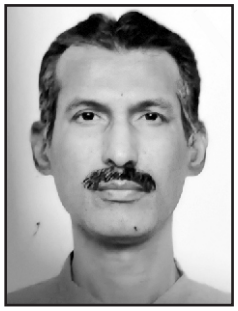
KETAN A DALAL

KUNJAL H NISHAR

LALITA R SHARMA

LALITSINGH BHADAUORYA

LAVKUSH T UPADHYAY

MADDHU R MEHTA

MANOJ S PANDEY

MOHIT K DUBE

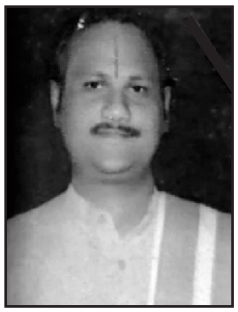
MUKUTADHAR PANDEY

NARAYAN D PAWAR

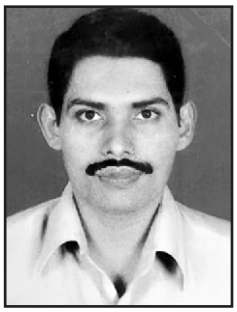
NARAYAN M PUROHIT

NIKHIL K KHANDELWAL

NIRMALA K VYAS

NISHA CHAUDHARY

POOJA N CHAWLA

ધ્યેય જેટલું મહાન હોય તેટલો જ તેનો રસ્તો લાંબો અને વિકટ હોય છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - MALAD HINDI

POONAM H BHUJAK

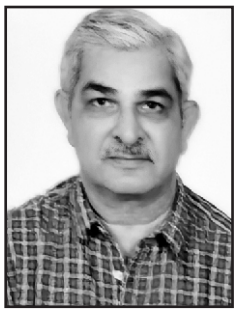
RAJENDRA K SHARMA

RAJESH N SAHAY

SANJANA B MISHRA

SANJOG R PATHAK

SARIKA G NAYAK

SHRINIVAS S IRABATTI

SUMEET S ROHRA

SUMIT MISHRA

TRUPTI M CHHADWA

UJWALA S SHIRSULLA

VEDANT S TIWARI

બુદ્ધિશાળી પોતાની બુદ્ધિથી શ્રીમંત બની શકે છે પરંતુ શ્રીમંત પોતાના પૈસાથી બુદ્ધિશાળી બની શકતો નથી.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - SECOND YEAR - MALAD HINDI

AKHILESH B VISHWAKARMA

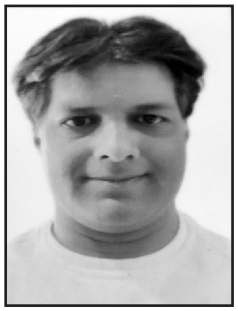
ARJUN R KATWA

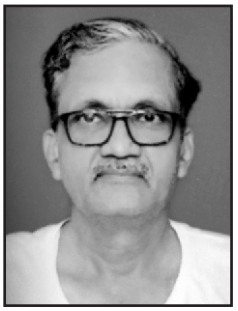
BALMUKUND D DAGA

BHUVANESH A SATAM

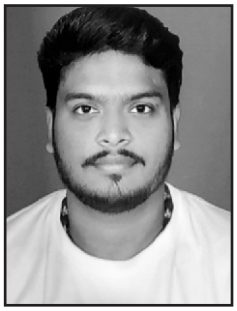
DHAWAL P RAJGOR

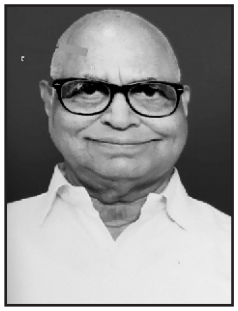
GAJANAN B KULKARNI

HARIKESH L PATHAK

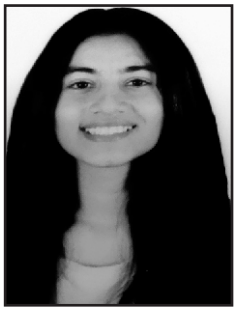
HONEY N GALA

MAMTA H MEHTA

MEENA R SHUKLA

NARESH PANCHAL

RAJKUMARI H SHARMA

RUPA V SHAH

SAPNA M THAKUR

SARANG B DAMUDRE

SUBHANGI S MANDOLKAER

બીજાની ભૂલોને માફ કરવી હજી સહેલી છે પણ આપણી ભૂલ કાઢનારાઓને માફ કરવા ખૂબજ મુશ્કેલ છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - SECOND YEAR - MALAD HINDI

URMILA M KOCHIKAR

URVASHI Y THAKKAR

VINAYAK K NAWALE

OUR ARDENT STUDENTS - THIRD YEAR - MALAD HINDI

ANJALI A AMBRE

HEMRAJ P ZAWARE

JAYSING A KHAMKAR

KEDARNATH K MODI

RAJIV M BANSAL

SUJITKUMAR R PANDEY

SWATANTRAKUMAR MISHRA

VANDANA S MISHRA

OUR ARDENT STUDENTS - SW - MALAD HINDI

RAKESH B SAWLANI

GAURAV U SHARMA

KUDIMAL J MODI

GULSHAN D MEHRA

જો નિર્બળ શરીર રોગોને આમંત્રણ આપી બેસે છેતો નિર્બળ મન દોષોને આમંત્રણ આપી બેસે છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT PASS STUDENTS - 2024

ALKA R VARDE

ALPA R SHAH

AVINASH B BHAGALIA

DAXA V KATELIA

DEVEN D SHAH

HEENA C CHHEDA

INDIRA S ACHARYA

KHYATI K VORA

KRUPA M UTEKAR

KSHITIJ B DAVE

LATA J JAIN

MAMTA R SHARMA

MEENA N SHAH

NEETA D MAHYAVANSHI

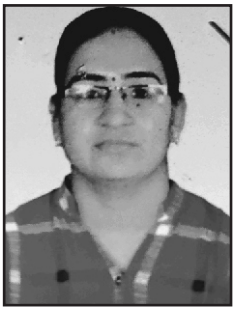
NILAM B SANCHALA

POOJA M VORA

આંધળા, લૂલા, બરીબ, અનાથ કે રોગીને જોઇને જેના દિલમાં સાચી દયા પ્રગટતી નથી તે રાક્ષસ નથી તો બીજું શું છે ?

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT PASS STUDENTS - 2024

POONAM G JAIN

POONAM O YADAV

RADHESYAM G KUMAVAT

SANSKRUTI S GOLE

SHEELA V KATHEEH

SONAL G JOSHI

SONY R CHIMNANI

SWETA S SONI

TINA J PANDIT

VIJAYAN NAMBIAR

VINOD R TELI

YOGESH B POPAT

દરેકનો ઉપદેશ સાંભળો પણ તમારો ઉપદેશ કોઇને જ કહો.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - MONDAY

ANITA H SHAH

GEETA S GOSALIA

MAHENDRA S MEHTA

NEETA S GALA

NEHAL H JHAVERI

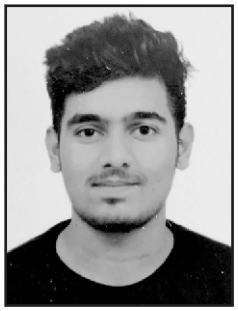
NEEIL J SHAH

NISHA B BHATTI

RITA M SHAH

SEEMA B MADHANI

UPASANA S MEHTA

VISHAL S KHAJANCHI

અંત સમયને જેટલો નજીક માનતા રહીએ એટલું જીવન સુંદર બનતું જાય છે અને અસુંદર બનતું અટકી જાય છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - SECOND YEAR - MONDAY

CHITRA B DAMANI

FORAM M GALA

HITESH K PITHADIA

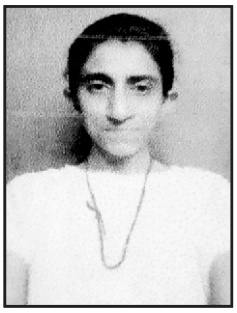

JYOTSANA R PATEL

KASHYAP M PARMAR

MADHVI D JOSHI

NEHA H KAPADIA

ROHIT R PATHAK

ઘણું બધું હતું એવું જે જીવનની ભાગદોડમાં જતુ કર્યું. પછી ખબર પડી કે જે જતું કર્યું એ જ જીવન હતું.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

વૈદિક જ્યોતિષ સંસ્થાન (રજીસ્ટર્ડ)

રજી. પત્રવ્યવહારનું સરનામું :
૧૨૧/૪૪ ડી, વિશ્વકુંજ સોસાયટી, સેક્ટર ૧, ચારકોપ, કાંદીવલી (વેસ્ટ), મુંબઈ-૪૦૦ ૦૬૭.
મોબાઈલ : ૯૩૨૨૨૬૧૭૦૯ / ૭૦૪૫૪૭૦૬૬૧ • ઈમેલ : vjtvv1@gmail.com

જ્યોતિષના નિઃશુલ્ક વર્ગો

ગુજરાતી માધ્યમમાં હસ્તરેખા, જ્યોતિષ, વાસ્તુ અને સ્વરજ્ઞાનના વર્ગોમાં પ્રવેશ
જાન્યુઆરી થી બોરીવલી અને મલાડ ખાતે

ગુજરાતી અને હિન્દી

૧. પ્રથમ વર્ષ- **વૈદિક જ્યોતિષ પ્રવેશ.**

૨. દ્વિતીય વર્ષ- **વૈદિક જ્યોતિર્ભૂષણ.**

૧. પ્રથમ વર્ષ- **વૈદિક વાસ્તુપ્રવેશ**

૧. **વૈદિક સ્વરજ્ઞાન જ્ઞાતા**

૧. પ્રથમ વર્ષ- **વૈદિક હસ્તરેખા વિજ્ઞાતા**

૩. તૃતિય વર્ષ- **વૈદિક જ્યોતિષમાર્તંડ**

૨. દ્વિતીય વર્ષ- **વૈદિક વાસ્તુભૂષણ**

૪. ચતુર્થ વર્ષ- **સ્વાધ્યાય**

નોંધ :
ભાષાનું જ્ઞાન ધરાવતા કોઈ પણ ઉમરના ભાઈઓ તથા બહેનો પ્રવેશ મેળવી શકે છે.

શાસ્ત્રમાં જ્ઞાન દાનને શ્રેષ્ઠ દાન કહેવાયું છે જે આ સંસ્થાનું એકમાત્ર ધ્યેય છે.

સંબંધ એ એક એવું વૃક્ષ છે કે જે લાગણી દ્વારા જકડી જાય સ્નેહ દ્વારા ઉગી જાય અને શબ્દો દ્વારા તૂટી જાય !

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

We are grateful to the Trustees, Committee and Management of the following Institutions for permitting us to utilize their premises for conducting our classes.

1. **Sheth M.K.E.S. English High School, Malad (W)**
2. **Anandibai Kale Vidyalay, Borivali (W)**

We are grateful to the Newspaper and advertisers for their best co-operation and support.

- ★ **Janmabhoomi**
- ★ **Mumbai Samachar**
- ★ **Gujarat Samachar**
- ★ **Nav Bharat Times Hindi**

સંબંધ એ એક એવું વૃક્ષ છે કે જે લાગણી દ્વારા જકડી જાય સ્નેહ દ્વારા ઉગી જાય અને શબ્દો દ્વારા તૂટી જાય !

(ॐ) मंगला चरण (ॐ)

॥ श्रवण के आरंभ का मंगलाचरण ॥

ॐ सत्यं ज्ञानमनंतं यन्निष्कलं निष्क्रियं परम् ।
अद्वितीयं निर्विशेषं ब्रह्म तत्समुपास्महे ॥१॥

वह जो सत्यरुप, ज्ञानरुप, अनंत, प्राणादि कलाओसे रहित माया से रहित सूक्ष्म और व्यापक, द्वैत्य से रहित और नामादि विशेष से रहित ब्रह्म है, उनका हम अच्छी तरह से ध्यान करते हैं। (१)

शंकरं शंकाराचार्य केशवं बादरायणम् ।
सूत्रभाष्य कृतौ वन्दे भगवन्तौ पुनः पुनः ॥२॥

विष्णुरुप भगवान व्यास और महेश्वररुप श्री शंकराचार्य जो ब्रह्मसूत्र के शारीरिक भाष्य के कर्ता है, वह अैश्वर्यादिवाले दोनों को मैं बार बार नमन करता हूँ।(२)

अज्ञान तिमिरांधस्य ज्ञानांजनशलाक्या।
चक्षुरुमीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥३॥

अज्ञानरुप अंधकारसे अँधे बने हुए की अंत:करणरुप आँखे जिन्होंने अंजन की सलाई द्वारा खोली वह श्री गुरु को मेरे प्रणाम हो। (३)

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्ति,
द्वंदातितं गगनसदृश्यं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्।
ऐकं नित्यं विमलचलं सर्वधीसाक्षीभूतं,
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुंतं नमामि ॥४॥

वह जो ब्रह्मरुप आनंदवाले, शिष्यों को परमसुख देनेवाले, अविद्या से रहित, ज्ञानरुप, सर्व द्वंद्वोसे पर, गगन जैसे निर्लेप वह आप है, इत्यादि महावाक्यों के लक्ष्यार्थरुप, एक तीनों कालमें रहनेवाले, सर्व प्रकार की अशुद्धि से रहित, चलायमान से रहित, सब प्राणीओं की बुद्धि के साक्षीरुप, छह प्रकार के भावविकारों से मुक्त एवम् तीन गुणो से रहित है, वह सद्गुरु को मैं वंदन करता हूँ।

समाप्ति मंगलाचरण

॥ श्रवण के समाप्ति का मंगलाचरण ॥

नमस्ते सते ते जगत्कारणाय, नमस्ते चिते सर्वलोकाश्रयाय ।
नमोद्वैततत्वाय मुक्तिप्रदाय, नमो ब्रह्मणे व्यापिने शाश्वताय ॥१॥

सत्यरुप आपको प्रणाम, जगत के कारणरुप आपको प्रणाम, ज्ञानस्वरुप और सर्व लोक के आश्रयरुप ऐसे आपको प्रणाम, अद्वैत तत्वरुप को मोक्ष देनेवाले को प्रणाम, व्यापक और शाश्वत ब्रह्म को प्रणाम। (१)

त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यं, त्वमेकं जगत्पालकं स्वप्रकाशम् ।
त्वमेकंजगत्कर्तृपार्तृप्रहर्तृ, त्वमेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम् ॥२॥

एक आप शरण ग्रहण करने योग्य हो, एक आप श्रेष्ठ हो, एक आप संसार को पालनेवाले तथा स्वयं प्रकाश हो, एक आप मायासे पर, अचल और सर्व विकल्पो से रहित हो।(२)

भयानां भयं भीषणं भीषणानाम्, गतिः प्राणानां पावनं पावनानाम्।
महोच्चैः पदानां नियन्तृ त्वमेकं, परेषां परं रक्षणं रक्षणानाम् ॥३॥

भय उत्पन्न करनेवालों के भयरुप, भयंकरों के बचकररुप, सर्व प्राणीओं की गतिरुप, पवित्र बनाने वालों को पवित्र बनाने वाले, एक आप उच्च पदो में रहनेवालों को नियम सें रखनेवाले, आकाशादि पर रहनेवालों से पर रहनेवाले और रक्षा करनेवालों की रक्षा करनेवाले हैं । (३)

श्रुतिस्मृतिपुराणानामालयं करुणालयम् ।
नमामि भगवत्पादं शंकरं लोकशंकरम् ॥४॥

श्रुति स्मृतिको पुराणों के रुप को और ध्याना के भी घररुप और लोगों का कल्याण करनेवाले, जिनके चरणों में अैश्वर्यादि रहे है ऐसे श्री शंकराचार्य को मै वंदन करता हूँ । (४)

એક ઝાડ પર કાંચીડાએ આત્મહત્યા કરી અને લખતો ગયો... રંગ બદલાવાની કળામાં માણસ સામે હું હારી ગયો.

नक्षत्र ज्ञान माला

अश्विनि भरणी पद चार
कृतिका एक चरण है मेष ।

कृतिका तिन रोहिण्ये चार
दो पद मृग वृषभ विचार ।

मृग दो पद आर्द्रा चार
तिन पुर्नवसू मिथुन विचार ।

एक पुर्नवसू पूष्य श्लेष
जानिये कर्कट राशि विषेश ।

मधा पूर्वा उत्तरा पद एक
सिंह राशिका करो विवेक ।

उत्तरा तिन सकल पद हस्त
दो पद चित्रा कन्या जानो ।

दो पद चित्रा स्वाति चार
तिन विशाखा पद है तुल ।

एक विशाखा अनुराधा चार
ज्येष्ठा पूर्ण है वृश्चिक विचार ।

मूल पूर्वा उत्तरा पद एक
धनु राशिका करो विवेक ।

उत्तरा तिन श्रवण पद चार
दो धनिष्ठा मकर विभेद ।

दो धनिष्ठा शतभिष चार
पूर्वा तिन पद कुम्भं निर्धार ।

पूर्वा एक उत्तरा चार
सकल रेवति मीन विचार ।

तिथि दोहा

प्रतिपदा एकादशी षष्ठी नन्दा जान।
दूज सप्तमी द्वादशी भद्रा मान।
तृतीया अष्टमी त्रयोदशी जया जान।
चौदशी चौथ नवमी येतो है रिक्ता मान।
पंचदशी पंचमी तथा दशमी है पूर्णा मान।
सब तिथियोके नाम सम जानो फल परिणाम।

वैदिक ज्योतिष संस्थान गुरुपूर्णीमां महोत्सव २०२५ के अवसर पर कुंडलि मिलान तथा नाडी दोष पर आधुनिक विचार।

हमारे भारत वर्षमें कुंडलीयाँ अष्टकुट मिलान पद्धति से मिलाई जाती है, यहा पर आठ बाबतो को ध्यान में रखकर बनाया गया था। जीवन साथी का चुनाव किया जाता है, यह नियम बन चुका है,पर यह युगो पुराना सिद्धांत है, जो आज भी बहोतही व्यापक प्रमाण से उपयोग कीया जाता है, परंतु आजके आधुनिक युग में यह पौराणीक नियमोमे काफी जगह विसंगती दीखाई पडती है, आजके वर्तमान समय में जिवन शैली में कुल मिलाकर आधुनिक परिवर्तन अपनाया जा चुका है, भौतिकता का मार्ग चुन लीया गया है, लग्न संस्था के मूलभुत सिद्धांत बदल गये है, आज हम ईस विषय पर विचार करेंगे।

१) **वर्ण:-** वर्ण द्वारा जाताककी कार्यक्षमता देखी जाती है जातकका स्वभाव, प्रभाव, प्रकृति तथा तत्वो को ध्यान में रखकर बारह राशियो को चार तत्वो में विभाजीत कीया जाता है,जैसे अग्नि तत्वमें (१,५,९) पृथ्वी तत्वमें (२,६,१०) वायु तत्वमें (३,७,११) जल तत्वमें (४,८,१२) राशिया समाविष्ट की गई है, वर्ण के गुण १ रखे गये है जबकी यहा पर ईतनी बाबते देखी जाती हो तो यहाँ ८ गुण होने चाहिये। (दोनो के चंद्र १ हि राशिमें युति बढीयाँ) (दोनो के चंद्र २-१२ वी राशिमें बिया बारु बुरा परिणाम) (दोनो के चंद्र ३-११ वी राशिमें त्री एकादश अच्छा परिणाम) (दोनो के चंद्र ४-१० वी राशिमें केन्द्र योग दोनो के बीचमें प्रती स्पर्धात्मक परिणाम अहम का टकराव) (दोनो के चंद्र ९-५ वी राशिमें नव पंचम योग दोनो के बढीयाँ परिणाम एक दुसरे के मन से जुडे हुवे तथा पुरक) (दोनो के चंद्र ६-८ वी राशिमें षडाष्टक योग दोनो शत्रुता अशुभ योग यहा षडष्टक योग दो तरीकेसे बनता हे शत्रु षडाष्क तथा प्रीती षडाष्टक योग) (दोनो के चंद्र ७-७ वी राशिमें समसत्पक कहाजाता है,यहा भी दोनो पात्रोमें प्रती स्पर्धात्मक परिणाम अहम का टकराव तथा विरोधाभाष नजर आता है।)

२) **वश्य:-** वश्य द्वारा जातक की पसंदगी तथा जीवन में अग्रता (प्रायोरीटी) कीसे देनी है यह देखा जाता है यहा पर बारह राशियो को पांच में विभाजीत की गई है,जैसे

१) चतुष्पाद: - मेष, वृषभ, धनु का उत्तरार्ध, तथा मकर का पूर्वार्ध।

२) मनुष्य:- मिथुन, कन्या, तुला, धनु का पूर्वार्ध तथा कुंभ।

३) जलचर:- कर्क, मीन तथा मकरका उत्तरार्ध।

४) वनचर:- सिंह।

५) कीट:- वृश्चक.

इस तरह दोनो जातको को कीस तरह का वातावरण तथा कार्य प्रणाली पसंद है यह पता चलता है, वनचर वाले पशु की तरह या यंत्र की तरह महेनत कर पाते है, जलचर वाले समुद्रमे आने वाली ज्वार भाटा जैसी अशांति अस्थिरता पाने वाले, कीट वाले दु:खी तथा छोटी छोटी बाबतोमें गुस्सा करने वाले, मनुष्य वाले सही अर्थमें मनुष्य जीवन जिते है यहा पर शस्त्रकारोने सिर्फ २ ही गुण रखे है जब की यहा ७ गुण होने चाहिये।

३) **तारा:-** यहा पर दोनो जातकोका नक्षत्र एक दुसरे से कीतना वाँ आता है उसके अनुसार फल देखा जाता है, यहा वर के नक्षत्रसे वधू का नक्षत्र एवं वधूके नक्षत्रसे वर का नक्षत्र गीनना होता है जैसे

१. ४. ६. १०. १३. १५. १९. १२. २४, सामान्य फलोकी प्राप्ति,

२. ८. ९. ११. १७. १८. २०. २६. २७ वी अति उत्तम फलोकी प्राप्ति,

३. ५. ७. १२. १४. १६. २१. २३ वी हो तो अशुभ फलोकी प्राप्ति, तारा के गुण शास्त्रकारोने ३ रखे है जबकी ५ होने चाहिये।

४) **योनि:-** यहा पर शास्त्रकारोने दोनो जातको के बीच में शारिरीक संबंध मे जुडनेकी क्षमता तथा तरीका कैसा होगा उस पर विचार किया है नक्षत्रो के अनुसार विविध प्राणीओ का वर्गीकरण किया है।

अश्व:- अश्विनी, शतमिषा. गज:- भरणी, रेवती, मेष:- कृतिका, पुष्य. सर्प:- रोहीणी, मृगशीर्ष. श्वान:- आर्द्रा, मूल. मार्जर:- पूर्नवसु, आश्लेषा. मुषक:- मघा, पू.फा. गौ:- उ.फा, उ.भा.

महिष:- हस्त, स्वाति, व्याघ्र:- चित्रा, विशाखा. मृग:- अनुंराधा, ज्येष्ठा. वानर:- पू.षा, श्रवण. नकुल:- उ.षा. सिंह– घनिष्ठा, पू.मा. योनि के गुण शास्त्रकारोने ४ रखे है जोकी ठीक है।

५) **ग्रह मैत्री:-** उपर हमने राशि का मिलान देखा अब हम ग्रहो के बीच मैत्रि संबंध देखेंगे जैसे मित्र -मित्र, मित्र- शत्रु, शत्रु-मित्र, शत्रु-शत्रु, सम- सम, सम - मित्र, सम-शत्रु, यह संबंध ग्रह एक दुसरे से कितने अंतर पर बैठे है उसके द्वारा तय होता है, ग्रह मैत्रि के गुण शास्त्रकारोने ५ रखे है जबकी ६ होने चाहिये.

६) **गण:-** यहां दोनो जातको का मानसिक अवस्था किस प्रकार की रहेंगी यह देखा जाता है, यहां नक्षत्रोको तिन प्रकार में विभाजीत किया गया है, देव, मनुष्य तथा राक्षस यहां सात्विकता राजसीकता जिद्दीपन देखा जाता है, देवगणमें अश्विनी, मृगशीर्ष, पुर्नवसु, पुष्य, हस्त, स्वाति, अनुराधा, श्रवण तथा रेवती यह देवगण के नक्षत्र यह जातक विशाल ह्रदयवाले आदर्शवाले सत्वगुणी तथा अहंकार रहीत स्वभाव वाले होते है।

मुनष्यगण में भरणी, रोहीणी, आर्द्रा, पू.फा, उ.फा., पू.षा, उ.षा, पू.भा. तथा उ.भा. नक्षत्र मनुष्यगण में समाते है यह जातक रजोगुणी होते है अपनी ताकत सीमित रहती है, यह जातक जीस तरफ बलाबल ज्यादा दीखे उस तरफ ढलने वाले तथा अपने कार्य पुर्ण करने वाले अर्थात समाधान कारी रहने वाले होते है।

राक्षसगण में कृतिका, आष्लेषा,मघा, चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, मूल, धनिष्ठा, तथा शततारका यह राक्षस गण के नक्षत्र है, यह जातक सामने वालोको अपनी बात मनवाने वाले अपनी मरजी अनुसार कार्य करने वाले संयम न रखने वाले।

मनुष्यगण वालोको बाकी के दोनो गण वालोसे जोड सकते है, देव तथा राक्षस गण वालो को जोडने की मान्यता हे सामान्यत मनुष्यगण वाले वर के साथ राक्षसगण वाली वधू को नही जोडना चाहिये गण के गुण शास्त्रकारोने ६ रखे जबकी ३ होने चाहिये.

७) **भकूट:-** यहा दोनो जातको को एक दुसरे से कीतनी लेना देनी रहेगी यह देखा जाता है, यहां दोनो जातक एक दुसरे के सहायक या पुरक बनेंगे की नही यह देखा जाता है, परंतु यह शास्त्र बना तब पुरूष प्रधान युग था आजके युग में युवती युवकोकी अधिनता स्वीकार्य नही करती क्योंकी आजकी युवतीयां शिक्षीत तथा आर्थीक स्वतंत्रता स्वावलंबन आ चुकी है, भकूट के गुण शास्त्रकारोने ७ रखे है जबकी २ होने चाहिये.

८) **नाडी:-** शास्त्रकारोने नाडी को सबसे ज्यादा महत्व दीया है प्राचीन युगमें विवाह करनेका कारण वंशवृद्धि होता था आज युग बदल चुका है चिकित्सा विज्ञान ईतना आगे बढ़ चुका है की संतान ना होना असंभव है आजकी पीढी संतान की बाबतको गौण समजने लगी है, इन्हे सिर्फ एक मैत्रीपूर्ण जीवन साथी चाहिये, नाडी याने और कुछ नही पर हमारे शरीर में समाई हुई रग याने नश है, आधनाडी रजो गुण तथा वात है, मध्यनाडी तमो गुण तथा पित्त है, अंत्यनाडी सत्व तथा कफ है, नाडी द्वारा मनुष्य का स्वभाव प्रभाव तथा प्रकृतिकी अधिकता के साथ जन्मेगां याने एक घटक के दोष युक्त जन्मेगां जो शारिरीक दुर्बलता पिडा या विकृती के साथ जन्मेगां १, नाडी एक हो परंतु राशि तथा नक्षत्र अलग हो, २, युवति का नक्षत्र युवक के नक्षसे पहले ना हो, ३, दोनो के नक्षत्रोमें १३ नक्षत्रोका अंतर हो तब नाडी दोष नही लगता, आधनाडी के नक्षत्र:- अश्विनी, आर्द्रा, पुर्वसु, उ.फा, हस्त, ज्येष्ठा, मूल, शततारका तथा पू.भा.मध्यनाडी के नक्षत्र:- भरणी, मृगशीर्ष, पुष्य, पू.फा, चित्रा, अनुराधा, पू.षा, धनिष्ठा, तथा उ.मा. अंत्यनाडी के नक्षत्र:- कृतिका, रोहीणी, आश्लेषा, मघा, स्वाति, विशाखा, उ.षा, श्रवण तथा रेवती. नाडी के गुण शास्त्रकारोने ८ रखे है जबकी १ होने चाहिये।

यह गुण मिलान के उपरांत दोनो जातकोके ग्रह मिलान भी अच्छा परिणाम देता है, यहां मुख्य सूर्य तथा चंद्र सूर्य आत्मा तथा चंद्र मन यदी दोनो पात्रोके सूर्य चंद्र एक दुसरेकी राशिमें बैठ जाये तो यह जोडी स्वर्ग से बना हुवा जोडा कहा जाता है, ये दोनो पात्र एक दुसरे का मन पढ सकते है तथा ये आत्मा से भी जुडे हुवे होते है, यहा ग्रहो का मिलान पर भी द्रष्टि करते है दोनो पात्र के सूर्य आत्मांका चंद्र से मनका मंगल से साथ सहकार बुध से बौधिक तथा भौतिक गुरु से मान सम्मान शुक्रसे भोग विलास जातिय जीवन, शानिसे सेवा तथा समर्पण, राहु से महत्वकांक्षा तथा उत्तेजना केतु से त्याग तडप वासना देखीजाती है। एक महत्व की बात कुंडली मिलान में ध्यान रखनी है वो हे एक लग्नराशि वालो को कभी भी नही जोडना चाहीये बहोत ही विकट परिस्थिती निर्माण होती है कारण गोचर ग्रह भ्रमण दोनो के एक साथ एक सरीखा जीवन भर चलने वाला है ये जोडा बीना कारण एक दुसरे से लडते झगडते रहेंगे इन्हे पता ही नही चलता क्यों झगड रहे है।

कुंडली मिलान एक बहोत ही जवाबदारी का कार्य होता है मिलान करने वाला ज्योतिषी के सिर एक अच्छे सुसंकृत समाज की रचना में योगदान माना जायेंगा क्योंकी आपने कीयाँ हुवे जोडी का मिलान उनकी आनेवाली संतति के परोक्ष रुप से विधाता का कार्य करते हो।

संकलन. आचार्य अशोकजी...

"श्री"

"ग्रहों के वर्गोत्तम :- पुष्कर का पलाश"

ज्योतिषशास्त्र में जन्म / लग्न कुंडली द्वारा हम हमारे जीवन के कई गुढ़ प्रश्नों का हल जान सकते है। पूछे गये कोई एक खास प्रश्न का सूक्ष्म फल जानने हेतु विद्वान ज्योतिषी उस विषय के संबंधित वर्ग कुंडली की सहाय भी लेते है। ऐसी साठ से अधिक वर्ग कुंडलीयाँ बन सकती है, जो सूक्ष्मातिसूक्ष्म फलकथन में सहायक बनती है। इन वर्ग कुंडलीयों में से नवांश कुंडली का उपयोग अधिकतर होता हुआ देखा गया है।

यदि लग्न कुंडली का लग्न या अन्य कोई ग्रह नवांश कुंडली में भी वही स्थिति में दिखाई देता हो, तो उस लग्न / ग्रह को "वर्गोत्तम" यानी "वर्ग - उत्तम" माना जाता है। अर्थात् उसे राजयोग समान फल प्रदाता कहा जाता है। जो जातक को उसके कारकत्व आधारित अधिक फल देने को सक्षम हो जाता है।

ग्रहों के वर्गोत्तमों को तीन प्रकार से देखा जाता है।

राशी वर्गोत्तम : जो ग्रह लग्न कुंडली व नवांश कुंडली दोनों में एक ही राशि में स्थित हो उसे "राशि वर्गोत्तम" ग्रह कहा जाता है। ग्रह व राशि स्वामी के आपसी नैसर्गिक संबंध के अनुसार ग्रह का फल देखा जायेगा।

तत्व वर्गोत्तम : जो ग्रह लग्न कुंडली और नवांश कुंडली दोनों ही में समान तत्व वाली राशि में स्थित हो उसे "तत्व वर्गोत्तम" ग्रह कहा जाता है। तत्व के अनुरुप फल प्राप्त करके फल की आधिकता देता है। सभी बारह राशियों को चार प्रकार के तत्वों में विभाजित किया गया है।

अग्नि तत्व: मेष - सिंह - धनु। अग्नि तत्व की ये राशियाँ उष्णता, क्रोध व तीव्र गति के साथ-साथ अंशत: धार्मिक आचरण दर्शाती है।

पृथ्वी तत्व: वृष - कन्या - मकर । पृथ्वी तत्व की राशियों द्वारा आर्थिक संपन्नता ज्ञात होती है।

वायु तत्व : मिथुन- तुलस - कुंभ । यहाँ पर जातक की बौधिक क्षमता देखी जायेगी।

जल तत्व: कर्क - वृश्चिक - मीन । ये राशियाँ मोक्ष-दाता, धार्मिक की भावना एवं एकांत, अलगाव - देनेवाली मानी गई है।

भाव वर्गोत्तम: लग्न कुंडली के बारह भावों में, जो ग्रह जिस किसी भाव में स्थित होगा, यदि नवांश कुंडली के उसी भाव में वह ग्रह दिखता हो तो उसे "भाव वर्गोत्तम" कहा जायेगा। उस खास भाव संबंधित बाबतों के फल में बढ़ौती अनुभव होगी।

अत: इस प्रकार राशि वर्गोत्तम (मन), तत्व वर्गोत्तम (वचन) और भाव वर्गोत्तम (कर्म), अर्थात मनसा-वाचा-कर्मणा... एक समान मन -विचार व कर्म का आचरण करनेवाले कहा गया है।

इसके अतिरिक्त ग्रहों के उच्च व नीच स्थिति के विषय में भी देखे तो हमें ज्ञात होता है कि, जो ग्रह लग्न कुंडली में उच्चस्थ हो, किन्तु नवांश में नीचस्थ हुआ हो, तो वह बाहरी तौर पर तो मजबूत दिखाई देता है, परंतु अंदर से निर्बल माना जायेगा। इसलिए अपनी दशा - अंतरदशा के समय में अच्छा फल नहीं दे पायेगा।

ग्रह लग्न कुंडली में नीच का हो, नवांश कुंडली में अपनी उच्च राशि में बैठा हो। वह बाहर से निर्बल, किन्तु अंदर से मजबूत होता है। दशा - अंतर दशा एवम् गोचर दरम्यान अच्छा फल देने की क्षमता वाला होता है।

ग्रह जब भी दोनों ही कुंडलीयों में नीचस्थ स्थिति में होगा, अर्थात उसकी फल देने की क्षमता नहीं के बराबर होगी।

वहीं, दोनों ही कुंडलीयों में अपनी उच्च राशि स्थित ग्रह अधिकतर बल प्राप्त करेगा, व राजयोग के समान पूर्ण फल दाता बनेगा। अति शुभ फल की प्राप्ति करायेगा।

वर्गोत्तम ग्रहों का अभ्यास करते समय एक और महत्वपूर्ण बात जानने मिली। ज्योतिष शास्त्र में पुष्कर नवांश की तुलना "पलाश वृक्ष" से की गई है। पलाश एक ऐसा वृक्ष है जिसके नारंगी - लाल रंग के आकर्षक फूल होते है। पलाश को आयुर्वेद में औषधीय प्रयोजनों के लिए उपयोग में लिया जाता है। और इसके फूल, छाल, पत्तीयां व बीज का उपयोग अलग-अलग बिमारीयों के इलाज हेतु किया जाता है। पलाश एक पवित्र वृक्ष माना जाता है। और कई धार्मिक अनुष्ठानों में भी इसका उपयोग किया जाता है। तत् पश्चात यह भी ज्ञात हुआ की ग्रहों के पुष्कर नवांश भी हमें इसी प्रकार शुभ फलों की प्राप्ति देते है और सुख दायक होते है। आइये देखते है, पुष्कर नवांश किसे कहते है।

उपर दर्शाये गये चारों तत्वों की प्रत्येक राशि में दो-दो पुष्कर नवांश होते है।

तदोपरांत उत्तम प्रकार के पुष्करांश की बात करें तो,

■ अग्नि तत्व की मेष-सिंह-धनु राशियों में
सातवाँ - तुला नवांश (२०° ००' - २३° २०') २३° २०'
नौवाँ -धनु नवांश (२६° ४०' - ३०° ००')

■ पृथ्वी तत्व की वृष -कन्या-मकर राशियों में-
तीसरा-मीन नवांश (०६° ४०' - १०° ००')
पाँचवा -वृष नवांश (१३° २०' - १६° ४०')

■ वायु तत्व की मिथुन -तुला-कुंभ राशियों में -
- छठा - मीन नवांश (१६° ४०'- २०° ००')
- आँठवा - वृष नवांश (२३° २०' - २६° ४०')

■ जल तत्व की कर्क - वृश्चिक - मीन राशियों में-
- पहला - कर्क नवांश (००° ००' - ०३° २०')
- तीसरा - कन्या नवांश (०६° ४०' - १०° ००')

अग्नि तत्व की राशियों के लिए २१°
पृथ्वी तत्व की राशियों के लिए १४°
वायु तत्व की राशियों के लिए २४°
और जल तत्व की राशियों के लिए ०७°

उत्तम पुष्करांश माने जाते है। किसी भी उच्च के ग्रह, या राजयोग के बराबर शुभतिशुभ फल देने की क्षमता रखते है।

किसी भी लग्न कुंडली में चंद्र का राशिपति, चंद्र से उपचय स्थान में (३-६-१०-११) बैठा हो... अपनी पुष्कर नवांश की राशि में हो... तो वैसा ग्रह उत्तमोत्तम वर्गोत्तमी जैसा फल देने की क्षमतार वाला बन जाता है। चाहे वह कोई अशुभ या क्रुर ग्रह होगा तो भी अशुभ फल की कमी करके शुभत्व को बढ़ायेगा।

अंततः सरल भाषा में कहना हो तो युं कह सकते है, कि जिस प्रकार उपजाऊ जमीन में बोया गया बीज समय के चलते वृक्ष बनकर अच्छे, मीठे और रसीले फल हमें देने लगता है, ठीक उसी प्रकार यह पुष्कर नवांश जैसे उपजाऊ जमीन है और उसमें बोया गया बीज याने ग्रह। जो समय के चलते अपनी दशा-अंतरदशा और सहायक गोचर के दौरान अच्छे शुभ फल का अनुभव कराके जातक को सुखी व पुलकित करते है।

हरी ॐ

अभ्यासी - **वर्षा धीरज रावल**

बीमारी से मुक्ति कब तक मिल सकती है ?

जब कोई रोग या बीमारी आकर किसी जातक को घेर लेती है तो वह हमें शारीरिक, मानसिक और आर्थिक रुप से मुख्य रुप से दिक्कत देते है। कोई भी व्यक्ति हो वह बीमारी -रोगसे ग्रासित नही रहना चाहता है, क्योंकी स्वास्थ ही जीवन का पहला सुख है। आज इसी विषय पर बात करेंगे। यदि कोई भी किसी भी तरह की बीमारी - रोग है तो क्या उनसे मुक्ति मिल पायेगी, बीमारी - रोग ठीक हो पायेगा और ठीक हो पायेगा तो कब तक आदि

किसी भी रोग - बीमारी बिल्कुल ठीक होने के लिए रोग - बीमारी से मुक्ति के लिए जिससे रोग - बीमारी हमेशा के लिए ठीक हो जाये और जातक- जातिका हमेशा के लिए ठीक हो जाये और जातक - जातिका हमेशा स्वस्थ रहे इसके लिए लग्न-लग्नेश और छठा भाव- छठे घर का स्वामी अच्छी अवस्था में होना चाहिए, कारण क्यों की लग्न और लग्नेश जातक-जातिका का शरीर है और रोगोंसे लडने की शक्ति देता है। शरीरको ही रोग-बिमारी होती है साथ ही छठा भाव रोगों मुक्ति का है कि कितनी जल्दी रोग से मुक्ति मीलेगी या लंबा समय लगेगा, किसी भी रोग को ठीक होने मे कितना समय लगेगा, यह छठा घर और इसका स्वामी की स्थिति बताएगी, एक तरहसे छठा भाव जातक-जातिका के रोग प्रतिरोधक क्षमता को दर्शाता है।

जो भी जातक-जातिका अस्वस्थ रहते है, किसी न किसी बीमारी ने ग्रसित कर रखा हो या कोई बड़ी बीमारी है उनका इलाज चल रहा और वह कब ठीक होगी यह सब लग्न-लग्नेश और छठे भाव के स्वामी की बलवान स्थिति तय करेगी, यह दोनों भाव और भावेश बलवान- शुभ होंगे तब कितनी भी बड़ी बीमारी-रोग किसी भी तरह का क्यों न हो ठीक हो जायेगा इलाज से इसके विपरीत जब छठा भाव और लग्न लग्नेश अशुभ कमजोर हुआ तब वर्षो तक दवाईयाँ खाते रहने पर भी बीमारी पूरी तरह ठीक नहीं होती, ऐसी स्थितिमें लग्न को बलवान करना चाहिए और छठे भाव और भावेशको शुभ और परिस्थिती अनुसार बलवान करनेके उपाय। अब कुछ उदाहरणोंसे समझते है। कैसे बीमारी ठीक हो सकती है या नहीं, और होगी तो कब तक आदि।

उदाहरण : १ जैसे कि वृषभ लग्न की कुंडली किसी बीमार या रोग-बीमारी से ग्रसित जातक-जातिका की बने, तब यहाँ लग्न का स्वामी भी शुक्र बनेगा और छठे घर का स्वामी भी शुक्र बनेगा, अब यहाँ मुख्य रुप से रोग - बीमारी को ठीक करना, या रोग देना यह सब शुक्र पर निर्भर करेगा , यदि शुक्र अशुभ भावगत होकर पीडीत हुआ तब एसे जातक को रोग और बीमारी जल्दी पकडेगी, क्योंकि यहाँ लग्नेश और छठे घर का स्वामी शुक्र हो, अब यहाँ रोग से मुक्ति तब संभव होगी जब शुक्र बलवान हो और केंद्र या त्रिकोणमें अपने मित्र ग्रहों के साथ हो, जैसे कुंडली के छठे भावमें ही हो लेकिन अपने मित्र बुध शनि आदि के साथ होगा तब जातक को बीमारी-रोग होने पर इलाज कराने पर जल्दी फायदा मिलेगा।

उदाहरण : २ जैसे की कर्क लग्न का स्वामी चन्द्र होता है, साथ ही छठे घरका स्वामी गुरु ग्रह होगा, अब यहाँ लग्नेश चन्द्र कमजोर होकर छठे घर में ही चला जाये और गुरु जो कि रोग भाव, छठे भानका स्वामी सातवे घरमें बैठकर लग्नको देखेगा तब एसा जातक-जातिका बीमारी रोग से ग्रसित ज्यादा रहेंगे क्योंकी लग्नेश चन्द्र खुद छठे घर- रोग के घरमें, हर रोग भावका स्वामी गुरु सातवे घर में नीच होकर लग्नको देखकर बीमारीको बढ़ाती हैं, ऐसी स्थितिमें जातक-जातिका को बीमारीयाँ ग्रसित रखती है, यहाँ चन्द्रमा को बलवान करने और गुरु की शांती के उपाय करने से ही रोग बीमारियों से मुक्ति मिलेगी, वरना कमजोर गुरु चन्द्र एसी स्थात्में रोग बीमारी बनाये रखेंगे।

नोटः जैसा कि उपर अभी बताया, लग्न लग्नेश, अशुभ स्थिति में भी हो और छठा घर और इसका स्वामी भी अशुभ स्थितिमें होगा तो रोग बीमारी तो रहेगी। लेकीन लग्न लग्नेश बलवान होगा सुर महादशा-दशा शुभ होगी तब बीमारी ठीक भी हो जायेगी, छठा घर इसका स्वामी अच्छी अवस्थामें होगा तब बीमारी रोग जल्दी ठीक हो जाता है।

अब बात करते है, क्या रोग बीमारी पर ज्यादा रुपया पैसा खर्च कब होता है और देरसे रोग क्यों ठीक होता है।

उदाहरण :३ तुला लग्नमें जैसे कि लग्नेश शुक्र होता है और छठे घर का स्वामी गुरु और धनभाव का स्वामी मंगल होता है अब यहाँ जैसे कि गुरु के साथ शुक्र संबंध बनाकर जैसे युति करके छठे घरमें बैठाहो या दोनोका किसी भी घरमें संबंध हो, शुक्र गुरुका और लग्न पर या लग्नेश शुक्र पर पाप ग्रह की दृष्टी हो जैसे शनि राहु या केतुकी तब ऐसा जातक - जातिका बीमारी ग्रसित रहेंगे क्योंकी रोगकी उत्पती हो रही लग्न लग्नेश शुक्रके पीडीत होने और छठे घर स्वामी गुरुसे संबंध होनेसे अब यहाँ दूसरे घर या दूसरे घरके स्वामी मंगल का संबंध शुक्र गुरु के संबंध से बन जाये, या शुक्र गुरुका एक साथ संबंध दूसरे से बनेगा जैसेकी शुक्र गुरु दुसरे ही घरमें पीडीत होकर बैठेंगे तब यहाँ रोग बीमारी पर पैसा ज्यादा खर्च होगा क्योंकि यहाँ रोग का संबंध लग्नेश - छठे घरके स्वामीका संबंध धनभाव या धन भावके स्वामी मंगलसे हो गया है। कम शब्दोमें कहुँ तो जब रोग, बीमारी होनेपर छठे घर या छठे घरके स्वामी लग्न या लग्नेश का संबंध दूसरे भाव या दुसरे भाव से भी हो जाता है तब रोग बीमारी रूपया पैसा ज्यादा खर्च होता है ऐसी स्थितिमें मेडीक्लेम जरुरी होता है और बीमारी से मुक्ति के उपाय करना ही ज्यादा अच्छा रहता है जिससे रोग - बीमारी न बैढें और रुपया पैसा बीमारी पर ज्यादा खर्च न हो।

जब भी लग्न और लग्नेश बलवान होगा और छठा भाव छठे भाव स्वामी बलवान और शुभ स्थितिमें होगा तब ऐसे जातक -जातिका को किसी भी तरह की बीमारी होने पर जल्दी ठीक हो जाती है।

लग्न लग्नेश और छठे भाव की शुभ स्थितिमें हमेशा निरोगी बनाकर रखेगी, जिन जातक -जातिका का लग्न लग्नेश, छठा भाव छठे भावका स्वामी बलवान होंगे उन जातक - जातिका के बडे से बडा रोग ठीक हो जाऐगें, इनके कमजोर होने पर रोग - बीमारी से लंबे समय तक लडना पडता है ऐसे में इन दोनो भाव-भावेश को बलवान करने का ही उपाय बीमारीको नष्ट कर देता है। बीमारी क्या होगी, यह लग्न लग्नेश और छठे घर पर पडने वाले ग्रहोंके अशुभ प्रभाव और लग्न लग्नेका संबंध किस भावसे है, छठे घर के स्वामी पर जिन ग्रहका प्रभाव होगा उन्ही ग्रहोंसे संबंधित बीमारी रहेगी, छठे घटनाओंका दर्द हो, पेट की दिक्कत, आँख की बीमारी आदि।

डॉ. हरीलाल मालदे
F.R.M.P., G.R.M.P., SBM

हस्तरेखा : प्रभावी रेखाओं का महत्व

जब कोई रेखा मुख्य रेखा या प्रधान रेखा के साथ सहायक रेखा के रुप में दिखती है तो उस मुख्य या प्रधानरेखा को अतिरिक्त बल मिलता है। यदि प्रधान या मुख्य रेखा कीसी जगह टुटी हुई हो तो वहाँ अतिरिक्त रेखा वो मुख्य रेखा के दोषो का निवारण करती है। यदि मुख्य रेखा अंतमें 'व्दीमुखी' हो जाती है, तो उस रेखा को अतिरिक्त बल म्लता है। लेकीन जातक का स्वभाव व्दीमुखी हो जाता है। ऐसा मस्तक रेखा के संदर्भ मे देखा जाता है। यदि मुख्य रेखा के अंतमें गो पुच्छ बनता हो तो यह स्नायवीक बिमारी दर्शाता है। ऐसा जीवन रेखा के अंत में देखा जा सकता है। यदि कोई रेखा मुख्य रेखा से निकलकर उपर की तरफ जाती हो तो वह अच्छी निशानी है। और कोई रेखा मुख्य रेखा से नीचे की तरफ जाती हो तो वह अशुभ माना जाता है। जो अच्छा फल नही देती जैसे की,

ह्यदय रेखा परसे उपर की तरफ जाने वाली रेखाए जातक को प्रेम में उनती दर्शाती है, लेकिन नीचे की ओर जाने वाली रेखा प्रेम मे असफलता दिलाती है। मस्तक रेखा पर से उपर की ओर जाने वाली रेखाए जातक को चतुर, सफल और महत्वकांक्षी बनाती है। भाग्य रेखा से उपर जानेवाली रेखा जीवनमें सफलता दिलाती है। चेन या जालीदार रेखाए, टुटी रेखाए, लहेरदार या पतली रेखाए इनकी अवस्था से फल देती है। यहाँ यह याद रखना जरुरी है की हस्तरेखा शास्त्र में छोटी से छोटी रेखा का महत्व कम नहीं होता।

जीवन रेखा से निकलनेवाली शाखाए और उनका प्रभाव :

जीवनरेखा और मस्तक रेखा के बीच सही अंतर हो तो जातक स्वतंत्र विचारक होता है। दोनो के बीच अंतर ज्यादा हो तो जातक अधिक आत्मविश्वासी, दुस्साहसी, आवेश या जोश से भरा हुआ, जल्दबाज होते है। जीवनरेखा, मस्तक रेखा और ह्यदय रेखा तीनो एकही स्थान से निकलती हो तो यह जातक के लिये अच्छा नही होता। जीवन रेखा से एक शाखा चंद्र की और जाती हो तो जातक को जीवनमें अधिक प्रवास, पर्यटन कराता है। वह एक जगह पर टीक नही सकता, जीवन रेखा से कोई शाखा गुरु पर्वत पर

जाती हो तो जातक की पदोन्नती होती है। उसकी महत्वकांक्षाए पूर्ण होती है। जीवन रेखा से कोई शाखा शनी पर्वत पर जाकर भाग्यरेखा से मिलती है तो जातक को धमनलाभ होता है। सांसारीक ईच्छा की पूर्ती होती है, लेकिन उसके लिए जातक को परिश्रम करना पडता है। जीवन रेखा की शाखा सूर्य पर्वत पर जाए तो जातक को विशीष्ट प्रकार के लाभ के अवसर प्रदान होते है। जीवन रेखा की शाखा बुध पर्वत पर जाए तो वर्गाकार हाथमें व्यापरिक सफलता, चमच आकार हाथ में आविश्कारक सफलता, शंकु आकार हाथमें आर्थिक सफलता प्राप्त होती है जो जुआ, सट्टा और व्यापार में जोखिम लेनेसे मिलती है। शुक्र पर्वत से निकलकर जीवन रेखा को काटकर बाहर की और जानेवाली रेखाए जातक के विरोधिओ को दर्शाती है। ऐसी रेखाए सिर्फ जीवन रेखा को ही काटती है तो जातक के विरोधी सिर्फ जातक के जिवन में ही हस्तक्षेप करते है। ऐसी रेखा भाग्य रेखा कोभी काटती है तो विरोधी जातक के व्यवसाय में भी नुकसान करते है और अन्य सांसारिक चीजों में भी विरोध करते है। यही रेखाए मस्तकरेखा पर पहोंचती हो तो वह जातक के मन और विचारो पर प्रभाव डालती है। ह्यदय रेखा पर पहोंचती है तो जातक के प्रेममें हस्तक्षेप होता है। इसकी गिनती रेखा जीवन रेखा को जहाँ से काटती है वहाँ से होती है। यही रेखाए सुर्य रेखा को काटे तो विरोधी जातक की प्रतिष्ठा को हानी पहुंचाते है। जीसके कारण बदनामी का डर रहता है और इसके आत्मसन्मानको भी ठेस लगती है। यही रेखा विवाह रेखा को काटे ता शादीमें रुकावट या विरोध होता है और आरोग्य रेखा को काटे तो आरोग्य की हानी होती है। इस तरह छोटी से छोटी रेखाए जीवनमें जबरजस्त तुफान ला सकती है। तो हस्तरेखा के विद्यार्थी फलकथनमें इन छोटी - छोटी बातो का ध्यान रखें और अच्छे से फलकथन करे। अस्तु....।

जयेश वाघेला

मुहूर्त - शास्त्र (तारा - चक्र)

आज हम देखेंगे तारा–चक्र को किस तरह से हमे बनाना है। हम किस तरह से तारा-चक्र का इस्तेमाल करें। पहले हम तारा-चक्र बनाना सिखेंगे। यहाँ हमे नक्षत्र का उपयोग करना है। तारा-चक्र के नौ विभाग होते है।

१) जन्म २) सम्पत ३) विपत ४) क्षेम ५) प्रत्यरी ६) साधक ७) वध ८) मित्र ९) अतिमित्र

किसी जातक का जन्म स्वाति नक्षत्र में हुआ हो तो उसका तारा-चक्र बनाते समय हमें जन्म के नीचे स्वाति लिखना है। सम्पत के विभाग मे स्वाति के बाद का नक्षत्र जो विशाखा है वो लिखना है। इस तरह से नौ विभाग पूर्ण करके फिर से जन्म के विभाग मे स्वाति के नीचे शततारा लिखना है। इस तरह से आगे बढ़ते हुए २७ नक्षत्र को हमे मौ विभाग में लिखने है। आईए देखते है तारा-चक्र

तारा - चक्र

जन्म	संम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यरी	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	जेष्ठा	मूळ	पू. षा	उ.षा	श्रवण	घनिष्ठा
शततारा	पू. भा.	उ. भा.	रेवती	अश्वीनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशीर्ष
आद्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मधा	पू. फा	उ.फा	हस्त	चित्रा
राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल

इस तरह से हमे अपने खुद के जन्म के नक्षत्र को लेकर तारा-चक्र बनाना है। अब हम तारा-चक्र से शुभ - अशुभ फल देखेंगे। जन्म के विभाग मे आनेवाले नक्षत्र जातक का नेचरल फल देंगे। सम्पत विभाग मे आनेवाले नक्षत्र जातक को शुभ फल देते है। विपत विभाग मे आनेवाले नक्षत्र अशुभ फलदायी है। क्षेम विभाग मे आए हुए नक्षत्र नेचरल फल देते है। प्रत्यरी विभाग के नक्षत्र जातक के लिए अशुभ होते है। साधक विभाग मे आनेवाले नक्षत्र भी नेचरल फल देते है। यह देरी से फल देते है। वध विभाग के नक्षत्र जातक के लिए बहुत ही अशुभ माने जाते है। मित्र विभाग मे आनेवाले नक्षत्र शुभ फल देते है। अतिमित्र विभाग में बैठे हुए नक्षत्र अति शुभ फलदायी होते है।

१-४-६ विभाग में आनेवाले नक्षत्र नेचरल है। तो बहुत ही आवश्यकता हो तो ही इन नक्षत्र मे शुभ कार्य की शुरुवात करें।

व्यापार संबंधित या कोई शुभ कार्य करना हो तो २-८-९ विभाग मे आनेवाले नक्षत्र में करना चाहिए जिससे हमे पूर्ण रुप से शुभ फल की प्रप्ति हो।

३-५-७ विभाग के नत्रज्ञ अशुभ फल देने वाले है। इसलिए इन नक्षत्रो में शुभ कार्य की शुरुवात नही करनी चाहिए।

इस तरह तारा-चक्र का इस्तमाल करके हम शुभा-शुभ फल जान सकते है।

।। अस्तु ।।

संकलन : **श्रीमती रुपल दमणीया**

दशा - आंतरदशा

ज्योतिषशास्त्र में अनेक दशायें अस्तित्व में हैं। ज्योतिष शास्त्र में विवध शाखाएँ है, उनमे विवध दशाओ का प्रयोग होता है। यह दशाये आत्मा, देह आयुष्य और कुछ मानसिक स्तर से जुडी है। विवध शाखाओं मे विवध दशाओं का प्रयोग होता है। यह दशाये कैसे पहचानते है ? हम से यह दशाये विवध प्रकार से जुडी है। सब दशाओं की एक अवधि निश्चित होती है। ग्रहो को विवध वर्षो मे बांटा गया है।

फल कथन के लिए वर्तमान समय(युग) के ज्योतिष आचार्यो का विशोंत्तरी दशा का उपयोग सुचित किया है। विशोंत्तरी दशा से हम सटीक भविष्य कथन कर सकते है।

दशायें ६० प्रकार की है। यहाँ कुछ निम्न प्रकार की दशायें दी गयी है।

१) विशोंत्तरी दशा : अवधि १२० वर्ष २) अष्टोत्तरी दशा : अवधि १०८ वर्ष ३) योगिनी दशा : अवधि ३६ वर्ष ४) कालचक्र दशा : अवधि ८३ वर्ष ५) स्थूलकाल दशा : अवधि जन्म से मृत्यु तक ६) पात्यायनी दशा ७) हद्दा दशा ८) मुद्रा दशा : जो ज्योतिष की ताजिक शाखा में आती है।

हम यहां विशोंत्तरी दशा का प्रयोग करेंगे। यह दशा जन्म कुंडली में चंद्र के अंश तथा उस नक्षत्र के स्वामी को दशानाथ से जानते है। महादशा की अवधि लंबी होती है तो यहाँ इस अवधि को आंतरदशा में भी विभाजीत किया है। महादशा में जिस दशानाथ की दशा होती है तो आंतरदशा उसी दशानाथ ग्रह से शुरु होकर क्रमानुसार आंतरदशा आती है। हर ग्रह की महादशा निश्चित है उसी नव ग्रह की आंतरदशा क्रमानुसार महादशा, आंतरदशा, प्रत्यंतर दशा, सुक्ष्मदशा तथा प्राणदशा होती है। इस तरह विशोंत्तरी दशा नक्षत्रो पर आधारित होती है। दशा में ग्रहो के क्रम नक्षत्र स्वामी ग्रहो के क्रमशः होते है।

उदा : चंद्र अश्विनी नक्षत्र मे है तो प्रथम केतु की दशा चलेगी बाद में भरणी - शुक्र की दशा होगी।

विशोंत्तरी दशा पध्दत्ति १२० वर्ष की होती है। यह दशा आत्मा से संकलित है। आत्मा से जुडी है। इस कारण जन्मो जन्म चलती है। यह दशा जन्म से पहले, जन्म के बाद और मृत्यु के बाद भी चलती है। सही में मनुष्य के श्वासों की संख्या को वर्षो में रुपांतरीत किया है। इसलिए यह अस्खलित चलती है।

इस प्रकार इस पध्दति से सही फलकथन किया जाता है। विस्तार से तथा सुक्ष्म स्वरुप से फल होता है।

ग्रह अपनी दशा में क्या फल देंगे और कब देंगे यह बात समझनी है।

१) दशानाथ सब से पहले जिस भाव में होगा उसी का फल देगा बाद में अपनी राशि के भाव का फल देगा।

२) ग्रह अपने स्वभाव तथा फारकत्व के फल देगा यदि कोई कारण कोई ग्रह कमजोर होगा तो फल में कमी होगी।

३) ग्रह अपने नक्षत्र स्वामी के कारकत्व का फल भी देता है।

जातक के जीवन में महत्वपुर्ण घटना, शादी, नोकरी, या शुभ -अशुभ घटना जो जीवन में बननेवाली हे या बनगई है यह दर्शाती है।

कुछ दशायें शुभ तो कुछ अशुभ होती है। जैसे दशा द्वारा कुंडली में ग्रहों की स्थिति है, ग्रह क्या योग बनाते है, उस प्रकार शुभ -मंगलकारी या अशुभ फल देते है।

विभिन्न ग्रहों की दशाओं की अवधि तथा परिणाम

१) केतु की दशा : ७ वर्ष

मोक्ष - अध्यात्मिक तथा गहन अध्ययन देता है। कमजोर केतु अशुभ ग्रहो की युति में दशा समय सगे-संबंधीयों से संबंधो को बिगाडती है।

२) शुक्र की दशा : २० वर्ष

धन संपत्ति आभुषण, विवाह, नौकरी, घर, संतान, मंत्रीपद, धार्मिक उत्सव, अच्छी भार्या देता है। यदि निर्बल शुक्र है तो परिवार में तनाव और हानि प्राप्त होती है।

३) शुर्य दशा : ६ वर्ष

सुर्य की दशा के पहले अवस्था का ज्ञान जरुरी है। उच्च, स्वगृही या मुल त्रिकोण राशि में है दिग्बलि है तो शुभ परिणाम प्राप्त होता है। निर्बल सुर्य दशा समय आत्मविश्वास की कमी, यश - मान - धन की कमी, हड्डीयो का कमजोर होना, सरकार से दंड, पिता-पुत्र विवाद, कष्ट या वियोग

४) चंद्र : १० वर्ष

भौतिक सुख -समृध्धि के लिए इसका बली होना आवश्यक वर्गोत्तम या शुभ योग में होने पर सफल जीवन देता है। निर्बल चंद्रमा की दशा में मानसिक असंतुलन अवसाद (उदासी) की स्थिति, यश-मान-धन हानि, माता के लिए परेशानी।

५) मंगल : ७ वर्ष

उच्च सामाजिक स्थिति, धन-संपत्ति, कृषि, भूमि-वाहन भाईयों में मधुर संबंध तथा शत्रु हंता बनाता है। निर्बल मंगल - दुर्गटनाये, रोग, चोरी, रक्त की बिमारी देता है। पुत्र - भाईयों से अनबन, पत्नी से मतभेद, चोट-घाव, कभी घमंडी या अधार्मिक होता है।

६) राहु : १८ वर्ष

धन-संपत्ति आजिवीका, नया घर, विवाह, विदेश में रहना (कायम स्वरुप) अन्य धर्म का प्रतिनिधित्व या विदेश से संबंध बनाना शुभ भाव से संबधित वैभव आनंद प्राप्ति लोकप्रियता, सफलता। कन्या, मिथुन या मीन का राहु अच्छा होता है।

निर्बल राहु - स्थान परिर्वतन, कलेश, विश्वासघात, धोखा जैसे परिणाम देते है। मान-यश-प्रतिष्ठा में गिरावट।

७) गुरु : १६ वर्ष

सरकारी लाभ, संतान, शिक्षा, स्वास्थ, धन-संपत्ति, विवाह, मित्रो से लाभ, श्रेष्ठ व्यक्तियोंसे सन्मान का अनुभव। निर्बल गुरु - निवास स्थान - परिर्वतन, धन-पुत्र हानी मानसिक तनाव।

८) शनि : १९ वर्ष

धन-संपत्ति, बचत, कर्मठ बनाता है। उच्च सामाजिक स्थिति, कृषी, व्यापार, शिक्षा से संबंधित आजिवीका । निर्बल शनि - असंतुष्ट, भय, चोरी, धन, स्वास्थ्य हानि, संतान कलेश, कारावास, वायु प्रकोप, गठिया, संधिवात, कृषिहानी, निम्नस्तर के लोगो से हानि।

९) बुध : १७ वर्ष

शिक्षा में उच्च प्राप्तियाँ, व्यापार वृध्दी, संचार-माध्यमसे आजिवीका, भाग्य, प्रशंसा प्राप्त होती है। निर्बल बुध - दिमाग की बिमारी चर्म रोग, शिक्षा में बाधा, चोरी, आग, सरकार भय, बुध - ६,८,१२ वे भाव में आय, उत्साह धन संपति पर दुष्ट प्रभावसे, पिलिया, वायु प्रकोप होता है। इस प्रकार बारह भाव के दशानाथ की दशा में शुभाशुभ परिणाम प्राप्त होता है।

दिप्त ग्रह की दशा में राजयोग सत्ता धन - सुख मिलता है। दशानाथ से भी आंतरदशा नाथ अधिक बलवान होता है। एक तरफी दृष्टी भी निर्बल बनाता है। महादशानाथ - आंतरदशा नाथ के बीच पंचधा मैत्री अनुसार मित्रता - शत्रुता देखना चाहिए।

विरुध्द प्रकृति वाले ग्रह दशा - आंतरदशा में हानि कारक फल देते है।

उदा. सुर्य में शनि की आंतर दशा

प्रमिला पांचाल

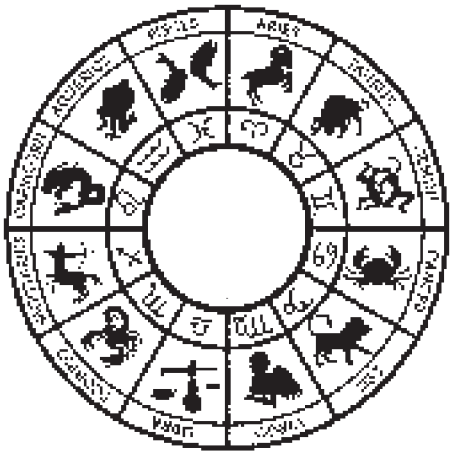

अपनी राशीके अनुसार व्यवसाय या कार्यका क्षेत्र

मेष राशिवालो के लिये पेशा और व्यवसाय :

खुद का व्यवसाय, नेतृत्व, सशकत बल, खिलाडी, व्यापारिक संगठन के नेता, अत्याधिक अधिकार वाले कुख्यात और शक्तिशाली लोग, शराब का सेवन, दंत चिकित्सक, न्यायिक कार्य, उपकरण, मशीनरी, हार्डवेअर, मैकेनिक, फायरमेन, उद्योग, कृषि, दवाएँ, रसायन, सर्जन, जुआ, बागवानी, आविशकारक, वास्तुकला, धातुकार्य, उर्वरक विक्रेता, सैन्य सेवा, सेना, इंजिनीयर, कसाई, सट्टेबाजी और लॉटरी।

वृषभ राशिवालो के लिये पेशा और व्यवसाय :

सेना मे इंजिनीयर, वाणिज्यक इकाई, वित्त प्रबंधक, लेखाकार, बँकर, शाहूकार, विलासिता के सामान का व्यवसाय, सिविल सेवक, खाधान्न, फल, बागवानी, पशुपालन, वेश्यालय, होटल, मूर्तिकार, जोहरी, बिल्डर, निर्माता, संपति डिलर, ललित कला, कला डिलर, गायक, सिनेमा, मॉडल, थिएटर, वाहन, मानसिक गतिविधियो सहित बौधिक क्षेत्र।

मिथुन राशिवाले के लिये पेशा और व्यवसाय :

शिक्षक, प्रवक्ता, गणिततज्ञ, लेखक, लेखाकार, इंजिनीयर, वैमानिक, अंतरिक्ष अनुसंधान, सचिव, स्टेनोग्राफार, टेलिफोन ऑपरेटर, आयात-नियात, सूतीवस्त्र उद्योग, पत्रकारिता, प्रेस - प्रकाशन, ट्रेवल एजंट, वाणिज्यिक यात्री, हवाईयात्रा, वायुसेना, समुद्र, शिपिंग, डाकिया, विक्रेता, निर्माता, टीप्पणीकार, आलोचक, डॉक्टर, बौधिक कार्य जिसमे मानसिक गतिविधी, संचार, प्रसारक।

कर्क राशि वालो के लिये पेशा और व्यवसाय :

नेतृत्व, पुराना डिलर, कलाबाजी, खेल, पन्हारा, नौसेना, जल परिवहन, बंदरगाह, मछली, समुद्री उत्पाद, नाविक, मोती, दुध, तरल और रसायन, हथियार, विस्फोटक, हस्तकला,कपडा उद्योग, खाद्य प्रबंधक, संगीत, नृत्य, अभिनय, शस्त्र, विज्ञान।

सिंह राशि वालो के लिये पेशा और व्यवसाय :

प्रशासन, सैन्य और राजनीतीक सेवाऐ, जौहरी, सोना, शिक्षक। कार्यकारी नौकरीया, तकनीकी और वैज्ञानिक सेवाऐ, पेशेवर खिलाड़ी, अभिनेता, अभिनेत्री, कला, सरकार और कूटनितीमें प्रसिध्धी, अनुसंधान, भूविज्ञान, होटल, भोजन, कृषि,वन, पशु, कोयला, पत्थर, संगेमरमर, पशुपालन, पहाडिया।

कन्या राशिवालो के लिये पेशा और व्यवसाय :

लेखाकार,अभिनेता, लेखक, शिक्षक, लिपिक,आलोचक, चार्टड अकांऊटंट, वागनोसे संबधित, दंत चिकित्सक, ललितकला, रत्न, सोना, मानसकि गतिविधि से संबधित बौधिक कार्य, जोहरी, कला और उद्योग, व्यापार प्रबंधन, गणित प्रशिक्षण प्रबंधन, नर्स, रीडर, विद्यान, गायक।

तुला राशिवालो के लिये पेशा और व्यवसाय :

वैमानिकी सलाहकार, ब्युटीशियन, सिनेमा, अभिनेता और निर्देशक, ललितकला, फल, पशु, खाधान्न, रत्न, जौहरी, न्यायाधीश, न्याय और कानूनी अदालत, वकील, मुकदमेबाजी, मध्यस्थता कार्य, चितित्सा, रबर, अंतरिक्ष, परिस्कृतकला, शिक्षक, परिवहन, कपडा उद्योग।

वृश्चिक राशिवालो के लिये पेशा और व्यवसाय :

सेना, रक्षासेवा, सैनिक, कला के क्षेत्र मे विशेष प्रतिष्ठा, सरकार और राजनायिक, अनाज व्यापार, औद्योगिक उददम, अविस्कारक, रसायनरी, अनुसंधान, वैद्यानिक, चिकित्सका, शल्यचिकित्सक, डॉक्टर, महिलाओसे संबंधित, लोहा और स्टील, भंडारण बंदरगाह, गुपी या अदृश्य कार्य, अदालते और वकील।

धनु राशिवालो के लिये पेशा और व्यवसाय :

मंत्री, सेना कमांडर, प्रवक्ता, शिक्षक, प्रोफेसर, प्रकाशक, दार्शनिक, सलाहकार, कार्यकारी अधिकारी, सिविल इंजीनीयर, पार्षद, अविस्कारक, पुजारी, पशुचिकित्सक, पशुपालक,अश्वारोही, वकील, पेशेवर खिलाडी, पशुपालन, लेखाकार।

मकर राशिवालो के लिये पेशा और व्यवसाय :

वास्तुकार, प्रबंधन, महान अधिकार और प्रतिष्ठावाले व्यवसायो मे शक्तिशाली लोग, कुटीर उद्योग, इंजीनीयर, रसायन, बिल्डर, निर्माता,दंतचिकित्सक, किसान, सार्वजनिक कार्य, गहन ध्यान, बागवानी उपकरण, जलीय उत्पाद। समुद्री उत्पाद, सिविल सेवक, वैज्ञानिक, कार्यक्रम, सर्वेक्षण या बैक जिम्मेदार कार्यकारी कार्य, बंदरगाह, आश्रय।

कुंभ राशिवालो के लिये पेशा और व्यवसाय :

ज्योतिषी, पुरातत्वादक, रवगोलविद, वैज्ञानिक, इंजिनीयर, अन्वेषक, कंम्प्यूटर प्रोग्रामर,बौधिक मानसिक गतिविधिया, स्थानीय निकाय, समाजशास्त्री, पायलट,चोरी, इलेक्ट्रीशयन, प्रचारक, प्रसास्क, रोडियोग्राफर, अग्नीशमन सेवा,शाब्दिक भटियाँ, रक्षात्मक हथियार, शारीरिक श्रम ।

मीन राशिवालो के लिये पेशा और व्यवसाय :

पुजारी, लेखक, अध्यात्मिक शांतीदुत, अंतरराष्ट्रीय व्यापार, नाविक, कलाकार, अभिनेता, अभिनेत्री, आयात-निर्यात, नौवहन, नौसेना, जल आपूर्तिकार्य, अस्पताल, अस्पताल के कर्मचारी, नर्सिंग होम, यौन सामग्रीमे सफल, शस्त्र, पशुचिकित्सक, जेल कर्मचारी, फोटोग्राफी, द्रव्य विशेषकर, किसी भी प्रकार के नशीले पदार्थ, रेस्टोरेंट और कॉफी हाऊस इत्यादी।

व्यापार महीं चल रहा है तो कब तक चल पाएगा

व्यापार जोकि रोजीरोटी के साथ जीवन के हर एक चीज से संबध रखता है। धन भी व्यापारसे आएगा और अच्छा जीवन भी रोजगारसे बनेगा। व्यापार नुकसान दे रहा है तब कबतक व्यापार से लाभ होने शुरु हो जाएगा, कब समय व्यापार उनिनती, व्यापारसे लाभ के लिए अच्छा है और क्या उपाय करे जिससे व्यापारमें खूब उनती हो जाए इसी बारेमें बात करते है! व्यापारमे अच्छी स्थिति और लाभ हो और नुकसान न हो इसके लिए जरुरी है व्यापार योग अच्छे हो, जैसे की व्यापार ग्रह बुध बलवान हो, बुधके साथ दसवा भाव दसमे भावस्वामी बलिहो, दुकानदारी व्यापार है तब ७ वा भाव और उसका स्वामी बलवान हो और धनलाभके भाव दूसरे और ग्यारवे भाव अच्छी स्थिती मे है तब व्यापारसे फायदा होगा, व्यापार अच्छा भी चलेगा जबकी यह भावोमेसे कोईभी एक भाव अच्छी स्थिति में नही है तब व्यापारमे उसी तरफसे नुकसान होगा जैसे ११ भाव अच्छा नही है तब आर्थिक लाभ व्यापार मे न होकर नुकसान होता रहेगा या लाभ की मात्रा नही बढेगी। व्यापार योग पूरी तरह से है तब उपाय करके व्यापार अच्छा चलने लगेगा बाकी व्यापार योग नही है तब जोब करना ही उत्तम है।

अब कुछ उदाहरणोंसे समझते है व्यापारमे नुकसान हो रहा है या उन्नती नही हो रही है तब कैसे लाभ होगा और क्या व्यापार जो कर रहे है वह कुंडली अनुसार ठीक है या नही या क्या करे ? उदाहरण अनुसार मेष लग्नमे १० वे भाव का स्वामी शनि बलवान है साथ ही धन स्वामी शुक्र और दुसरा ग्यारहवा भाव सहित व्यापार ग्रह बुध भाबलवान है तब ग्रहदशा अनुकुल हो इसके उपाय या जोभी भाव व्यापार से संबधित कमजोर है उस भाव के उपाय करनेसे व्यापार मे आर्थिक और व्यवसायिक लाभ होने लगेगा।

उदाहरण अनुसार गलत व्यवसाय का चयन :

उदाहरण अनुसार धनु लग्न : धनु लग्न मे ७ वे और १० वे भावस्वामी बुध अत्यंत बलवान होकर यहां बलवान और शुभशक्ति और शुक्रके साथ संबंधमे है तब व्यापार चलेगा लेकीन यहा व्यापार शनि और शुक्र प्रधान चीजें जैसे लोहा, लोहे से बने सामान, तेल, कॉस्मेटीक शोप, ज्वेलरी, कपडेका काम आदि ही लाभ देगा। जबकी इन शुक्र, शनि, बुध से संबंधी काम नही है तब भी व्यापार मे नुकसान होगा।

अब व्यापार योग है तब कुंडली अनुसार जिनकामो के व्यापारमे सफलता है उस चीजके व्यापार करने से लाभ होगा जबकी कुंडली अनुसार व्यापार संबंधी धन या धनलाभ या व्यापार करानेवाले ग्रहोमे दिक्कते है तब उपाय करनेसे व्यापार सही तरह से चलकर लाभ देगा, जबकी व्यापार ग्रहयोग नही है तब नौकरी या जिसभी कार्यक्षेत्र मे रोजगार ग्रह ने बना रखा है उस कार्य को करने से रोजगारमें सफलता मिलेगी।

शेयर मार्केट कीसको बनायेगा करोडपति

शेयर मार्केट मे अगर किस्मत साथ दे तो इन्सान लखपति क्या करोडपति, अरबोपति बन जाता है।

कुंडलीका ५वा भाव शेयर मार्केट का है तो ११वा भाव शेयर मार्केट से लाभ मिलनेका है तो राहु, सूय, गुरु, बुध है इस कारण सर्व प्रथम कुंडलीमे राहु, सूर्य, बुध गुरु बलवान हो या रहे और ५ वा भाव और ५ वे भाव स्वामी का संबंध ११ वे भाव स्वामी से कुडंली बना रहा है तब शेयर मार्केट से अच्छा धन लाभ होगा इसके अलावा शेयर मार्केट योग होने पर ५ वे और ११ वे भाव या ५ वे और ११ वे भाव स्वामी से राजयोग बन रहा है या राजयोग कुंडली मे बना हुआ है और दूसरा भाव जोकी इन का है बहुत मजबुत है कुंडलीमे तब शेयर मार्केट से धनवान बन जाऐंगे।

अब कुछ उदाहरण से समझते है शेयर मार्केट से पैसेवाला कौन ?

उदाहरण अनुसार मिथुन लग्न : मिथुन लग्न कुंडलीमे ५वे भाव स्वामी शुक्र और ११ वे भाव स्वामी मंगलका संबंध है और दुसरा भाव जोकी धनका है यह बलवान है तब शेयर मार्केट से अच्छा धनलाभ रहेगा। अब ५ वे भाव या ५ वे भाव स्वामी से कुंडलीमे राजयोग बन रहा है तब शेयर मार्केट से लखपति, करोडपति, अरबपति बन जाऐंगे।

उदाहरण अनुसार तुला लग्न :

तुला लग्नमे ५ वे भाव स्वामी शनिका संबंध ११वे भाव स्वामी सूर्य से है और राहु, गुरु, बुध मजबूत है तब शेयर मार्केट योग है, लाभ होगा। अब यहाँ ५ वे भाव स्वामी शनि और ११ वे भाव स्वामी सूर्य राजयोग मे है तब शेयर मार्केट खेलनेसे पैसेवाले धनपति बन जाऐंगे।

उदाहरण अनुसार कुंभ़ लग्न :

कुंभ लग्न में ५ वे भाव स्वामी बुध तो ११ वे भाव स्वामी कुंडलीमे गुरु अगर संबंध बनाकर बैठे है और राहु, सूर्य भी कुंडली मे मजबुत है तब शेयर मार्केट से अच्छा लाभ योग है। अब यहाँ ५ वा भाव और ५ वे भाव स्वामी राजयोग मे है तब शेयर मार्केट से धनवान बन जाऐंगे

शेयर मार्केट से धनवान बनने के रास्ते बने हुए है तब अच्छा समय आने पर शेयर मार्केट खेलनेसे भाग्य के व्दार खुल जाऐंगे।

डॉ. हरीलाल मालदे
F.R.M.P., G.R.M.P., SBM

वक्री ग्रह
कुंडली में वक्री ग्रहो का महत्व

पृथ्वी और ग्रहो की गति में परिवर्तन होने पर ग्रह वक्र या स्थिर हो जाते है। ऐसे समय में वे ग्रह वक्र या स्तिर दिखाई देते है क्योंकि वे पृथ्वी के करीब और सूर्य से दुर होते है।

पंचांग में वक्री ग्रहो को राशी चरण खण्ड में घटमे दिखाया जाता है, जब ग्रह सूर्य से ६, ७, ८पर आते है तो वक्री हो जाते है, सूर्य चंद्रमाँ सदेव माग्री ही चलते है, राहु-कोड सदेव वक्री गति से चलते है।

ग्रहो के पारागमन का समय

१) मंगल ग्रह पर वर्ष लगभग ८० दिन का होता है।

२) बुध वर्ष ३ से ४ बार

३) गुरु वर्ष में लगभग ३ से ४ महिने

४) शुक्र वर्ष में ४५ दिनो तक वक्री होता है।

५) शनी २ १/२ वर्ष में दो बार वक्री होता है।

वक्री ग्रहो की अमार दशा ओ के परिणाम उतार-चढाव वाले होते है।

जन्म का वक्री ग्रह गोचर में वक्री होने पर भी परिणाम देता हुआ देखा जाता है। देखे की जन्म से पहले कोनसा ग्रह वक्री था और जन्म के समय वक्री होने के बाद कितने दिन बीत चुके थे। यह वक्री ग्रह इस दिन के बराबर एक वर्ष के बाद जातक को परिणाम देता हुआ देखा जाता है।

जब गोचर में अशुभ ग्रह जन्म के समय अशुभ ग्रह के उपर से गुजरता है तो बल तो अच्छा होता है लेकिन परिणाम अशुभ ही रहता है इसी तरह जब गोचर में अशुभ ग्रह के समय शुभ ग्रह के उपर से गुजरता है तो शुभ और शक्तिशाली परिणाम मिलता है।

गोचर में बुध वक्री : किसी भी समजोते पर हस्ताक्षर न करे। बातचीत मे सावधानी बरते।

शुक्र वक्री : प्रेम बढता है जीवन का मूल्य समझ मे आता है।

मंगल वक्री : अहंकार बढता है। वाद-विवाद, लडाई-झगडा, दुर्घटना आदि हो सकती है।

गुरु वक्री : लोगों को आध्यात्मिक ओर दार्शनिक बनाता है। लोग संकीर्ण सोच वाले बन जाते है।

शनि वक्री : व्यापार में परेशानी हो सकती है। जिम्मेदारी न लें।

नेपच्युन वक्री : बुद्धि बढेगी। बुरे लोगो से दुर रहें।

प्लुटो वक्री : गोचर में पाप ग्रह एक साथ वक्री हो तो समाज में अपराध बढ़ जाते है।

कुंडली में विभिन्न ग्रहो के वक्री होने पर अपेक्षित परिणाम :

मंगल : बहुत सी परेशानीया होती है, सारे काम बिगड़ जाते है, जातक धमकिया देता है, अजीब सा गुस्सा, हाथ मे लिये गये प्रोजेक्ट धीमे हो जाते है, घर के व्यक्ति से लगाव कम हो जाता है, मंगल की दशा में अग्नि शत्रु प्रताडने का भय रहता है और अकेले रहेना पसंद होता है, वह मंगल शुभ हो तो काम करने की प्रबल इच्छा और लडनेकी ताकत आती है।

बुध : जातक को अपनी बात दुसरो को समजाने में दिक्कत होती है जब बुध वक्री होकर ५ भाव मे होतो जातक की बुद्धि कम काम करती है बुध वक्री होने पर लोग अंतर्मुखी हो जाते है। बुध गोचर मे वक्री होता है तो बाजार में अफरातफरी मच जाती है।

गुरु : जातक को धर्म, आध्यात्म, नैतिकता आदि के मामलो में कठिनाईयों का अनुभव होगा, पर बुद्धिमान होते है, इन्हे रास्ता नीकालना आता है, यह खुद को अपनी मर्जी का मालिक मानता है, शत्रुओ पर विजय और पारिवारिक सुख-समृद्धि देता है, एसे जाताक घाटे मे चल रही कंपनी को उठाकर ऊपर ला सकते है।

शुक्र : हालांकी वे भावनाओ को बहुत हगराई से समज सकते है, लेकिन उन्हे व्यक्त नही कर पाते और इसलिये इन्हे रिश्ते बनाने य बनाये रखने में कठिनाई होती है, इनका वैवाहिक जीवन अच्छा नही रहता, ये मंत्र और तंत्र मे रुची रखते है।

शनी : गुप्त ज्ञान की और झुकाव बढता है, लेकिन अपने वरिष्ठो से नही पटता, जीम्मेदारी नही लेता, जहां बैठा है, वहा से सातवे भावका प्रभाव दिखाता है, पर फिजुलखर्ची और मानसिक तनाव देता है। मानसिक तनाव के कारण एकांत पसंद होता है।

हर्षल : प्रेरणा अच्छी है। शरिर और आत्मा एक दुसरे से जुडे हुए है। ऐसे लोग अपनी बदलती जीवन शैली के कारण झगडते रहते है।

नेपच्युन : सपनो से जुडेलोग। वास्तविकता से दुर भागने पर ये लोग रचनात्मक बन जाते है।

प्लुटो : इन लोगो में अहंकार होता है। ये लोग दुसरों पर भरोसा नही करते लेकिकन राजनीती में यह प्लुटो फल देता हुआ नजर आता है।

हरि ॐ

- नितिन भट्ट

नवमांश कुंडली

नवमांश कुंडली इसलिए महत्वपुर्ण है क्योंकि यह राशि और नक्षत्र को जोड़ने वाली कड़ी है। इसी वजह से सभी राशि मे नव नवांश है (२१/४ नक्षत्र बराबर नव नवांश), बारह मे से तीन राशि लुप्त /hidden राशि है। उसमे बारह नहीं सिर्फ नव राशि आती है। आखिरकार, शायद कर्म, आय और व्यय ही वे तीन चीजें हैं जो किसी व्यक्ति के जीवन का निर्धारण करती हैं। दसमांश कुंडली मे दो राशि लुप्त होती है। नवम भाव आपके पिछले जन्म में आपके द्वारा किए गए कार्यों का प्रतिबिंब/प्रतिक्रिया है, जिसे आप इस जिवन में भाग्य कहते हैं। यह उन लोगों के लिए है जो पुनर्जन्म में विश्वास करते है। आहार, निंद्रा, भय, मैथुन ये मनुष्य और पशु मे समान है। इंसान मे केवल धर्म है अर्थात बिना धर्म के व्यक्ति पशु तुल्य है। नवमांश याने नौवे भाव की ऊर्जा है। तो आप नवमांश लग्न लेते है और राशि चार्ट पर वापस लेते है जो पिछले जन्म के गुरू को दर्शाता है, कैसे गुरु ने पिछले जन्म से मेरी रक्षा की और मुझे इस जन्म में लाया। आप इस जन्म में कैसे आये ? तुम्हे कौन मिला ? गुरू आपकी आत्मा का गुरू है, वो आपके शरीर का गुरू नहीं है, वह तुम्हारे मन का गुरू नहीं है। आप पिछले जन्म से इस जन्म में जो आये है वह आपकी आत्मा है। याद रखे पिछले जन्म से इस जन्म तक जो आ रहा है वह आपकी आत्माहै। इस लिए केवल एकमात्र चीजे जो नवमांश के माध्यम से आ रही है वह आपकी आत्मा है। इसलिए नवमांश लग्न जब राशि चार्ट मे देखा जाता है तो आपका गुरू आखरी/पिछले जन्म से आ रहा है यही कारण है इसे लग्नांशक कहा जाता है। वह (गुरू) छत्र- वह आश्रय है क्योंकि आपने पिछले जन्म में उस गुरु के साथ आश्रय लिया। बृहस्पति हंमेशा ज्ञान का प्रकाश देते रहते हैं, बिना यह सोचे कि बदले में आपको कुछ मिलेगा या नहीं, क्योंकि उन्हें बदले में कुछ नही चाहिए, बल्कि सत्य देना है। आपको wisdom देखो गुरु के जो ९, १२-धन, मीन वो ३,६,१०,११- उपचय को नियंत्रण /control मे लेकर रखा है। शनि के दोनों घरों को गुरुने अपने अधीन /under मे लेकर रखा है –शुभ कर्तरी मे /hemmed/ घेरे रखा है। बाकी बुध के दो घरों को देखते है। जहा पर आपका freewill –स्वतंत्र निर्णय लेना है। यही उपचय -३,६,१०,११ घर है। और जब आपका स्वतंत्र निर्णय लेना हो और कोई आपको अच्छा और सच्चा सलाह देनेवाला हो लगातार आपको शुभ तरीकेसे कर रहा हो और नवम घर में अच्छे ग्रह हो, आपका नवमेश दसम घर मे हो राशि ग्रह जब दशा मे पूरी हो जाए परिक्रमा /circuit पूरा होता है।

मेष राशि में तुला नवांश का ग्रह है – १-७ संबंध – उसका बहुत स्पष्ट agenda / कार्यसुची यह है की वो आपको संबंध relationship/-रिश्ता मे लेकर जा सकता है, साजेदारी / भागीदारी मे लेकर जा सकता है।

तुला राशि में तुला नवांश का ग्रह है – १-१ संबंध –धन और समृद्धि दे सकता है क्योंकि दोनों तरफ तुला बहुत समृद्धि की राशि है।

वृषभ राशि में तुला नवांश का ग्रह है – ६-८ संबंध - संसाधन /resources की वृषभ राशि वो तुला मे जा रही है दोनों पैसा देनेवाली राशि है।

वो कोनसे भाव से संबंधित है और शुक्र की स्थिति कैसी है ध्यानमें रखकर देखिए वही नवांश तुलाका १-७, ७-७, ६-८ तिनो का परिणाम / फल अलग है। तो कभी भी सिर्फ नवांश देखकर फल/परिणाम नहीं देना है।

उसके पृष्ठभूमि है (१) कहा से नवांश है (२) वो किसको संबंधित करताहै वो नवांश – वो देखना है। जिस तरीके से एक ही राशि मे नव नवांश होते है। अगर बोलू की सातवे घर के अंदर तुला का नवांश और पहले घर के अंदर तुला का नवांश हो तो दोनों मे जमीन आसमान का अंतर होता है क्यू की हरेक घरका agenda /कार्यसूचीअलग है। तो इस तरीके से आप देखिए की वही नवांश इस पर निर्भर करते हुए किस घर पर नवांश बन रहा है।

समग्र विश्लेषण

d-1 लग्न से निर्णय लेने के बाद d-9 लग्न से भी निर्णय लें

किस ग्रह की शक्ति, शुभता या कमजोरी का निर्णय d-1 और d-9 लग्न दोनों से ही नवमांश में किया जाना चाहिए।

d-1 लग्न प्रत्यक्ष परिदृश्य को प्रकट करेगा

d-9 लग्न विश्लेषण को और भी बेहतर बनाएगा

d-1 और d-9 लग्न दोनों से शुभ ग्रह ही पूर्ण शुभता देगा

दोनों लग्नों से खराब स्थिति में स्थित ग्रह बहुत नकारात्मक परिणाम देगा

d-1/d-9 लग्न से लाभकारी लेकिन d-1/ d-9 लग्न से खराब स्थिति में स्थित ग्रह मिश्रित परिणाम देगा

डी -1 के त्रिकोण के भाव / ग्रह, डी -9 में त्रिकोण में जाए डी -1 के केंद्र के भाव / ग्रह, डी -9 में केंद्र में जाए डी -1 के त्रिकोण के भाव / ग्रह डी -9 में केंद्र में जाए

तो शुभ भाव / ग्रह synastry (संभवित संगतता और संबंध निर्धारित / निश्चित करने के लिए दो या अधिक लोगों की कुंडली के बीच तुलना)

डी -1 के त्रिकोण के भाव / ग्रह, डी -9 में दुस्थान (६,८,१२) में जाए

तो अशुभ भाव / ग्रह synastry (संभवित संगतता और संबंध निर्धारित / निश्चित करने के लिए दो या अधिक लोगों की कुंडली के बीच तुलना) उसी तरह डी -1 लग्न और उसके बारह भावों, डी -9 का लग्न बन जाए। तो शुभ भाव / ग्रह synastry (संभवित संगतता और संबंध निर्धारित / निश्चित करने के लिए दो या अधिक लोगों की कुंडली के बीच तुलना) जीवन के मार्ग के बारे मे एक संकेत होगा।

नवमांश में स्थित ग्रह,राशि चार्ट डी-1 में अपने राशि स्वामी की ताकत की जांच करें। यदि डी-1 में उसका राशि स्वामी यानी डिस्पोजिटर उच्च, सेवा, मित्र, केंद्र कोना, दिग्बल, वर्गोत्तम आदि में है, तो

उसके नवमांश में ग्रह अत्यधिक मजबूत होगा। यदी डी-1 में उसका राशि स्वामी यानी डिस्पोजिटर नीच, ६वें ८वें, १२वें, अस्त, गंडात, पाप ग्रहों के साथ, राशि का अंत या आरंभ, पापकर्तरी आदि उसके नवमांश में बैठता है तो ग्रह कमजोर और शक्तिहीन हो जाएगा। नवमांश में ग्रह लेकिन उसका डिस्पोजिटर बल डी-1 में देखें और डी-9 में नहीं। यह बहुत महत्वपूर्ण है। राशि चार्ट में नवमांश राशि का डिस्पोजिटर की स्थिति देखनी होगी यह अस्त, दुर्बल या किसी अन्य तरह से पिड़ित नहीं होना चाहिए।

अश्विनी से शरु करते हुए, पहला नक्षत्र सृष्टी नक्षत्र है, दूसरा स्थिति है और तीसरा संहार नक्षत्र है। फिर चक्र दोहराया जाता है। इस प्रकार अश्विनी से गिना गया तीसरा नक्षत्र संहार नक्षत्र है। परिणामस्वरूप सुर्य, राहु और बुध के नक्षत्र संहार नक्षत्र हैं। जो ग्रह किसी भी संहार नक्षत्र के तीसरे या चौथे पद में पडता है उसे दुरितांश कहा जाता है। तीसरे या चौथे पद में कोई भी संहार ग्रह हानि पहुंचाने के लिए अतिरिक्त संवेदनशील होता है। यह विशेष रूप से ग्रह के कारकत्व द्वारा इंगित रिश्तदारों से या उनके लिए समस्याएं पैदा करता है। वे दर्द, पीड़ा या यहां तक कि मौत का कारण बनते हैं, भले ही वे प्राकृतिक लाभकारी हों। अनुभव बताता है कि जातक रिश्तेदार या स्वयं के जीवन सुख को खो देता है। 'गैर जीव कारवत्वों" से जुड़ी खुशियों का आनंद फिर भी उठाया जा सकता है। प्रतिकुल परिणामों का अनुभव (१) ग्रह के प्राकृतिक चरित्र के अनुसार (२) ग्रह की स्थिति के अनुसार (३) ग्रह के आधिपत्य के अनुसार किया जा सकता है। उपरोक्त सभी को मुख्य रुप से राशि चार्ट में देखा जा सकता है। दुरितांश में ग्रह पर आगे और अतिरिक्त पीड़ा के कारण ही परिणाम वास्तव में प्रतिकुल होता है। अन्यथा यह केवल मामूली लेकिन निरंतर जलन पैदा कर सकती है। एक ग्रह दो तरह से दुरितांश में हो सकत है, (१) कुंभ में होने से या (२) नवमांश चार्ट में मी में होने से। कुंभ राशि में स्थित ग्रह अधिक हानिकारक हो सकता है यदि डी-1 या डी-9 में शनि पीड़ित है या बुरी तरह से स्थित है, तो यह बहुत प्रतिकूल परिणामों का संकेत देगा ऐसे मामलों में, परिणाम आमतौर पर मृत्यु होता है, शनि का एक कारकत्व, कुंभ एक वायु तत्व राशि है जो कालपुरुष में व्यक्ति के मन के काम (तीव्र लालच) पहलू का प्रतिनिधित्व करती है। मीन एक अज्ञेय/जल तत्व/मोक्ष/लाभ तत्व की राशि है। इसमें स्थिति बहुत कम नुकसान पहुंचाती है, जब तक कि बृहस्पति बुरी तरह से स्थित और पिड़ित ना हो। बुध के नक्षत्रों के तीसरे और चौथे पद सूर्य की तुलना में अधिक प्रतिकूल हैं। राहु सबसे कम हैं। यह उनके नक्षत्र देवता के प्रभाव के कारण है। आश्लेषा और रेवती के दुरितांश सर्प द्रेष्काण में आते हैं। नवमांश हमें हमारे पिछले अच्छे कार्यों से प्राप्त आशीर्वादों को दिखाता है, साथ ही भगवान से हमारा आशीर्वाद (जो उच्च चेतन स्तर पर विभेदित नहीं किया जा सकता है) यह आत्मा है जो विभिन्न अवतारों के माध्यम से आशीर्वादों को वहन करती है। आत्मा को एक कुंडली में आत्मकारक ग्रह द्वारा दर्शाया गया है। नवमांश में आत्मकारक को कारकांशा (महत्व का विभाजन) कहा जाता है। यहीं से ज्योतिषी आत्मा की इच्छाओं और दिव्य रुपों को बता सकता है जो जातक के गरहे लक्ष्यों का समर्थन कर रहे हैं।

संकलन : **किशोर पटेल**

अष्टक वर्ग का अनुठा विश्व

विद्वानों ने मानव की इच्छाओं की पूर्ति के लिए ज्योतिष शास्त्र का निर्माण किया है। अष्टक वर्ग उनमें से एक है।

वैदिक ज्योतिष की एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्राचिन पद्धति है, जिसका प्रयोग ग्रहों की स्थिति और गोचर के प्रभावों का विश्लेषण करने के लिए किया जाता है। यह प्रणाली ग्रहों के बल, शुभ-अशुभ प्रभाव और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उनके योगदान को संख्यात्मक (Numerical) रूप में दर्शाती है।

अष्टकवर्ग का अर्थ:

"अष्ट" = आठ। = "वर्ग" = समूह या श्रेणी

यहां आठ ग्रहों (सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरू, शुक्र, शनि और लग्न) आठ प्रकारके वर्ग इसमें राहु केतु शामिल नही होते। अष्टक वर्ग के माध्यम से बारीकी से फलित किया जाता है। ग्रहों की ऊर्जा और उनका सूक्ष्म बल देखने की बहुत सटीक पद्धति है।

फलित ज्योतिष में गोचर का फलित हम लग्न या चंद्रमा को देखर करते हैं। अष्टक वर्ग बाकी के ग्रहों के गोचर को भी देख लेता है और उनसे मिलने वाले सूक्ष्म बल को भी देख लेता है और संयुक्त बल बनाकर के हमारे सामने रख देता है। सभी ग्रहों के बलाबल उनकी सूक्ष्म ऊर्जा को ध्यान में रखकर शूभ अशुभ फलित करने की एक पद्धति है।

▸ कैसे काम करता है अष्टकवर्ग?

हर ग्रह और लग्न के लिए कुडली के १२ भावों में से प्रत्येक में बिंदु या रेखा दी जाति है। प्रत्येक ग्रह दूसरे ग्रहों के साथ मिलकर यह तय करता है कि वह किसी विशेष राशि में शुभ फल देगा या नहीं।

अगर किसी भाव में अधिक बिंदु हैं (जैसे ५,६,७), तो वह भाव मजबूत और शुभ माना जाता है। कम बिंदु (१,२,३) अशुभ या कमजोर फल बताते हैं।

इन बिंदुओं का कुल योग उस भाव की शक्ति (Strength) और ग्रह के गोचर प्रभाव (Transit Effect) को दर्शाता है।

▸ अष्टकवर्ग के प्रकार

- भिन्नाष्टक वर्ग : हर एक ग्रह के व्यक्तिगत बिंदुओं की गणना।
- सामुदायाष्टक वर्ग : सभी ग्रहों के कुल बिंदुओंका योग।
- सर्वाष्टकवर्ग : सभि ग्रहों और लग्न के बिंदुओं का संपूर्ण योग।

▸ अष्टकवर्ग का प्रयोग:

- गोरचर के अच्छे-बुरे प्रभाव जानने के लिए।
- दशा-अंतर्दशा के फलों का आंकलन करने के लिए।
- गृह प्रवेश, विवाह, नौकरी आदि के शुभ मुहूर्त तय करने में।
- रोग, धन, संतान, विवाह करियर आदि के विश्लेषण में

▸ दिशा का ज्ञान अष्टकवर्ग से कैसे होता है?

अष्टकवर्ग केवल ग्रहों के बिंदुओं को देखने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें दिशाओं का ज्ञान भी छिपा होता है। अष्टकवर्ग के माध्यम से विशेष रूप से गोचर में किस दिशा से लाभ, प्रगति, हानि या कष्ट होगा- इसका संकेत मिलता है। इसे दिशा ज्ञान (Directional Guidance) कहते हैं। इसके लिए मुख्य रूप से निम्नलिखित विधि अपनाई जातीहै।

१. **लग्न एवं चंद्र से सम्बंधित स्थान देखना** (House Analysis)

सबसे पहले देखें कि आपके लग्न और चंद्र राशि से कौन-कौन से भावों में बिंदु (Bindu) अधिक हैं। जिन भावों में अधिक बिंदु होते हैं, वे क्षेत्र और दिशा में लाभ और शुभता का संकेत देते हैं।

२. **दिशाओं का भावों से सम्बन्ध** (Houses & Directions)

३. **अष्टकवर्ग बिंदु का विश्लेषण** (Bindu Analysis)

जिस भाव में ५ या उससे अदिक बिंदु होते हैं, वह भाव और उसकी दिशा शुभ मानी जाती है। यात्रा, व्यवसाय, निवास आदि के लिए उसी दिशा का चयन करें जहाँ बिंदु बलवान हो।

४. **गोचर में ग्रहों का प्रभाव** (Transit Influence)

वर्तमान में जो ग्रह गोचर कर रहे हैं, उनके अष्टकवर्ग में देखें कि किस भाव में अधिक बिंदु हैं। गोचर में शुभ ग्रह यदि उच्च बिंदु वाले भाव में हों तो उस दिशा में जाना, काम करना अत्यंत लाभदायक होता है।

५. **भिन्नाष्टक वर्ग उदाहरण** (Example):

मान लीजिए आपकी कुंडली के दशम भाव में गुरु स्थित है जिसे ६ बिंदु प्राप्त है और वहां गुरू का गोचर है- इसका अर्थ होगा कि दक्षिण दिशा से सम्बंधित कार्य, व्यवसाय, यात्रा आपके लए लाभकारी रहेगी।

६. सर्वाष्टकवर्ग उदाहरण (Example)

दिशा को ढूंढने के लिए नीचे दिए गए चार एकम बनाया

पूर्व दिशा १(लगन), १२, ११ भाव

दक्षिण दिशा १०,९,८ भाव

पश्चिम दिशा ७,६,५ भाव

उत्तर दिशा ४,३,२ भाव

यहां पर जिस समुदाय में बिंदु ज्यादा रहेंगे वह दिशा से शुभ फल प्राप्त होंगे और जो समुदाय में कम बिंदु मिलते हैं वह दिशा से अशुभ फल मिलेंगे! अधिक बिंदु वाले समुदाय में स्वगुही, उच्च, मित्रक्षेत्री रहेंगे वह दिशा साहस पर्यटन और मेहनत करने से वहां के पूर्ण फल प्राप्त हो सकते हें।

उदाहरण :

अगर किसी जातक के पंचम भाव (पश्चिम दिशा) में अष्टकवर्ग में ३० बिंदु हैं –तो पश्चिम दिशा से शिक्षा, संतान, प्रेम आदि क्षेत्रों में लाभ मिलेगा।

अगर षष्ठ भाव (उत्तर-पश्चिम) में केवल १६ बिंदु हें- तो इस दिशा से संघर्ष, रोग या विरोधी उत्पन्न हो सकते हैं।

दिशा सुधार (Direction Remedies):

शुभ दिशा में कार्य करना, यात्रा करना, निवास बनाना।

अशुभ दिशा में धार्मिक उपाय जैसे- मंत्र जाप, दान, व्रत

- प्रीति ठाकर

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत। (कठोपनिषद्) उठो, जागो और ज्ञानी गुरुओं से ज्ञान प्राप्त करके उसे समझो।

दानवों के गुरु शुक्राचार्य

ब्रम्हाजी के दो पुत्र थे। एक ऋषि अंगीरस और दुसरे भृगुऋषि। ऋषि अंगीरस के पुत्र का नाम बृहस्पति और भृगऋषि के पुत्र थे शुक्राचार्य इस प्रकार बृहस्पति और शुक्राचार्य दोनों चचरे भाई हुए। सदीयों से हम देखते और सुनते आये है कि चचरे भाईओं के आपसी संबंध उतने मीठे ज्यादातर नहीं होते है। कुछ ऐसा ही इन दोनों के बीच केमें भी हुआ।

इन दोनो ने ऋषि अंगीरस के पास अपना अभ्यास शुरु किया। विद्या प्राप्त की। दोनों की तुलना में शुक्रचार्य अधिक होशियार और चालाक थे परंतु पुत्र - प्रेमी ऋषि अंगीरस ने बजाय शुक्राचार्य अपने पुत्र बृहस्पति को ही देवताओंका आचार्य घोषित किया। इससे अपमानित और क्रोधी शुक्राचार्य ने अपने बाकी की शिक्षा गौतम ऋषि से ली। इसके पश्चात अपने अपमान का बदला लेने की शक्ति प्राप्त करने हेतु भगवान शिवजी की उपासना और तप करने चले गये। जिससे प्रसन्न होकर महादेवजीने शुक्रचार्यजी को मृत संजिवनी विद्या का वरदान दिया। इस कारण भगवान विष्णूजी क्रोधित हुए।

शुक्रचार्यजी मदद हेतु फिर से शिवजी के पास पहुंचे। शिवजी ने उन्हें बताया कि आप आर्यावर्त से दुर, जहाँ विष्णुजी कोई बाधा उत्पन्न न कर सके ऐसे प्रदेश में जाओ और मेरे शिवलिंग की पूजा करो। शुक्राचार्यजी नैऋत्य दिशा के प्रदेश में चले गये। उस प्रदेशमें राहु का अमल था। वर्तमान साउदी अरेबीया अरबस्तान में जाकर शुक्राचार्यजी ने वहाँ शिवलींग की स्थापना की और पूजा-अर्चना - ध्यान - तप - भक्ति करने लगे।

राहुने उन्हें वहाँ दानवों का गुरु घोषित किया और अनेको मान - सन्मान दिये। इस प्रकार शुक्र और राहु परम मित्र बन गए। राहु ने अपने माया और मोहिनी का प्रभाव शुक्र को भेट दिये।

ये जो नैऋत्य कोणीय प्रदेश है, वहाँ आज भी इस्लाम धर्म का प्रभाव अधिक देखा जाता है। आज भी शुक्रवार उनके लिये अधिक महत्व का है, जिसे वे जुम्मा भी कहते है।

हमारी फिल्म इंन्डस्ट्री पर शुक्र का प्रभाव देखा जाता है। इसलिये आपने देखा होगा कि कोई भी नई फिल्म शुक्रवार को ही आती है। सेंट, परफ्युम, इत्र इत्यादि खुशबु शुक्र के प्रभाव मे आती है। जिसका महत्तम व्यवसाय करने वाले इस्लामी होते है। शुक्र यानि गुलाब का फुल। दरगाह जैसे धार्मिक स्थलों पर में फुलों की चादर चढाई जाती है। लाल गुलाब प्रेम का प्रतीक है। प्रेमी युगल अपना प्यार- महोब्बत दर्शाने हेतु एक दुसरे को लाल गुलाब का फुल भेंट देते है।

काल पुरुष की कुंडली में दुसरे (कुटुंब स्थान) और सातवे (दाम्पत्य स्थान) भावों का राशि स्वामी शुक्र है। शुक्र प्रभावित उस प्रदेश में आज भी चचेरे या मौसेरे भाई-बहन की शादी होती है। शुक्र विनय - विवेक भी दर्शाता है। शायद इसलिये फारसी भाषा में आभार हेतु शुक्रिया शब्द प्रचलित है। काव्य -कविता के लिये कव्वाली शब्द भी आया है।

राहु और शुक्र की मैत्री वाले इन प्रदेशों में धन की कमी कभी नही रही है। इन दोनों के एक खास दोस्त शनि है। अर्थात यहाँ के भुगर्भ में क्रुड तेल, पेट्रोल का खजाना भरा पडा है।

चंद्र को किसीसे वैर-भाव नही है। शुक्र भी उनको मान देते है। उनकी धर्म-ध्वजा में उन्हों ने चन्द्र को स्थान दिया है। और धार्मिक त्योंहारों में भी वे चाँद-वर्ष को ही मानते है।

राहु एक मलेच्छ ग्रह है, जो सनातन हिन्दु धर्म को नही मानता है। शुक्राचार्य जी व्दारा स्थापित शिवलिंग के पुजा तो वहाँ के लोग करते है किन्तु उसे भी उन्होंने अपने धर्म का नाम ही दे दिया है।

हरी ॐ.....

अभ्यासी : **वर्षा धीरज रावल**

VITAMINS ARE ESSENTIAL SUBSTANCES WHICH HELP AGAINST COVID-19

VITAMINS	FOUND IN	ESSENTIAL FOR
A	Carrots, Pumpkin Spinach, Broccoli, Mangoes, Peaches	Normal Growth, Good Vision, Mucos, Membrane Supply, Healthy Skin, Skeletal & Tooth Development .
C	Broccoli, Puratues, Green Peppers, Citrus Cauliflower, Tomatoes, Guavas, Strawberries, Litches	Body Tissue Formation, Healing Woundy ,better Resistance To Infection, Increase Absorption Of Iron.
E	Asparagus Broccoli Peas, Spinach, Tomato, Parsnips, Leeks Avocados, Mangoes	Formation Of Red Blood Cells, Protects Cell Membranes From Damage By Free Radicals.
B1	Peas, Potatoes, Spinach Pumkin Brocoli, Oranges, Grapes, Guaves	The Metabolism Of Carbohydrate Protein And Fats Supports Normal Appetite & Nervous System Functioning.
B2	Spinach Asparagus Broccoli, Lettuce Potatoes	Healthy Skins, Utilisations Of Nutrients The Relecare Of Energy Supports, Normal Visions.
B3	Greenbeans, Peas, Potatoes, Tomatoes	The Breakdowns Of Giucore In The Body Production Of Engergy Through Chemical Reactions In Cells.
B6	Peas, Marrow, Melons Sprouts, Bananas Avocados Mangoes	Formation Of Nervous System Helps To Make Protein In The Body Needed For Brain.
Folic Acid	Asparagus, Broccoli Spinach, Sprouts, Green Beans, Leeks, Melons, Oranges, Pears Avocados	Formation Of Cells Functioning Of Gut Prevention Of Anaemia. Reduces Birth Defects Of Babies.

Collection by : **Dr. Harilal Malde**
F.R.M.P., G.R.M.P.5BM

गर्भावस्था और ग्रहों का प्रभाव

माता के गर्भ में बच्चा नौ मास. नौ दिनों तक गर्भस्थ अवस्था में रहता है। इसके आधार रुप देखे तो ब्रम्हांड के सभी नौ ग्रह गर्भस्थ शिशु को अपने - अपने किरणों व्दारा शक्ति प्रदान करते है। और ये ग्रह अपने स्वभावानुसार गर्भ में पल रहे बालक के शरीर के अंगो को विकसित करते है।

भारतीय संस्कृति में ऐसे कई उदाहरण व कथा हमें यह बताती है कि बच्चा अपनी माँ के गर्भ में सचेत अवस्था में होता है। और गर्भावस्था दरम्यान मिलता वातावरण, माता के आहार, आचार, विचार की सीधी असर गर्भ मे पल रहे शिशु ग्रहण करता है। और तभी से ग्रहों की शुभाशुभ असर मिलना भी शुरु हो जाती है।

गर्भस्थ शिशु का योग्य विकास हो, तथा उसकी सुरक्षा हेतु माता इन नौ माह में क्या - क्या ध्यान रखना होता है, गर्भस्थ महिला की लग्न की कुंडली में जो ग्रह शुभ अवस्था में होंगे, उस ग्रह संबंधित मास में वह स्वस्थ रहती है। और अशुभ ग्रह संबंधित मास में जच्चा -बच्चा दोनों को ही तकलिफ हो सकती है। ऐसे समय डॉक्टर की सलाह तो आवश्यक रहेगी ही, अपितु ज्योतिषीय उपाय लाभप्रद बनते है। यहाँ लग्न कुंडली के साथ ग्रहों की गोचर स्थिति का अभ्यास भी आवश्यक होता है।

प्रथम मास में स्त्री-बीज और पुरुष - शुक्राणु का मिलन होता है। इस मास में शुक्र का प्रभाव देखा जायेगा। शुक्र को मजबुत बनाने हेतु शुक्र ग्रह के मंत्र जाप करने से होते है - ॐ द्रां द्रीं दौं सः शुक्राय नमः । व्दीतीय माह में मास मज्जा बनने लगते है। स्वामी मंगल है। जिसके लिये ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भोमाय नमः मंत्र जाप सहायक बन सकता है। गर्भावस्था के तिसरे माह में गर्भ पिंड के देह की वृध्दी होती है, लिंग बनता है और जीव उत्पन्न होने के संकेत मिलते है। इस दरम्यान जीव कारक के मंत्र जाप फायदेमंद रहते है -ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।

चतुर्थ मास के दौरान गर्भ में पल रहे शिशु की हड्डीयाँ मजबूत बनती है और शरीर में सुदृढता का विकास होता है। यहाँ हमें कारक सूर्य सहायक बनेगा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः। पंचम मास में गर्भस्थ शिशु का मानसिक व भावनात्मक विकास होता है। अपनी संवेदना प्रगट कर सकता है व शरीर में रक्त-द्रव्य की उत्पत्ति होती है। मन व माता कारक चंद्र का मंत्र - ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः सोमाय नमः मददकर्ता सिध्द होगा। गर्भ के छठे माह में बच्चे को बाल, नाखुन व रुँए आना शुरु होते है। ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः - शनि देव की उपासना करनी होगी।

सातवे महिने में र्ग में पल रहे शिशु की चेतना जागृत होनी शुरु हो जाती है। बौध्धिक विकास होता है। वह सुख-दुःख का अनुभव करने लगता है। बुध्धि प्रदान करने वाले बुध्द देव की सहाय हेतु माता ॐ ब्रां ब्रींब्रौं सः बुधाय नमः का जाप कर सकती है। सभी नौं महिनों में से गर्भ का आँठवा महिना थोडी तकलिफ देने वाला, भारी, जटिल देखा गया है। इस समय दरम्यान गर्भस्थ माता को पूर्ण आराम करना होगा। यहाँ हमें लग्न कुंडली का लग्नेश ग्रह सहायक बनेगा। लग्न के स्वामी की उपासना करनी होती है।

नवम व दशम मास के स्वामी ग्रह चंद्र व सूर्य है। अर्थात उनकी मालाएँ जपनी होती है। गर्भावस्था में माता यदि गर्भ रक्षांबिका स्त्रोत पठन करेगी तो यह भी सुखदायक सिध्द होता है।

हरी ॐ.....

अभ्यासी : **-वर्षा धीरज रावल**

अष्टक वर्ग विवेचन - प्रश्न -उत्तर

१) अष्टकवर्ग मे बिन्दु या रेखा भाव मे होते है या राशी मे ?

उत्तर : वास्तव मे A-V के रेखा बिंदु भाव मे ही होते है। क्योंकी इस पध्धति मे सुर्या दि सात ग्रह (☊ ♄) को नही लेते। यह सात ग्रह जिस भाव मे बैठते है वहाँ से शुभा-शुभ किरणे भाव को देते है नाकी राशीयों पर.

२) षष्ठ, अष्ठम, व्दादश भावो की रेखा संख्या अधिक हो तो क्या फल ?

उत्तर : सामान्य नियम जिस भाव मे अधिक रेखाएँ हो तो उस भाव के फल की वृध्धि होती है। अतः ६. ८. १२ भावो मे लग्न से अधकि रेखाए रहेंगी तो अवश्य ही इन भावो के क्रमशः रोग, शत्रु, मृत्यु, व्यय आदि फल बैठेंगे। अतः स्पष्ट है लग्न की अपेक्षा कम रेखा होना ही शुभ है।

३) सुखी वैवाहिक जीवन के लिए सप्तम मे कितनी रेखा होनी चाहिए ?

उत्तर : किसी भाव मे समुदायाष्टक को १४ या उलले कम रेखाए उस भाव के सारे सुखों को नष्ट करने मे सक्षम है। परंतु १४ से अधिक रेखाए भाव को मध्यम कहा है। २८ से आगे - उस भाव का शुभाशुभ मे बढाता है। अतः २८-४२ तक रेखा योग उत्तम।

४) गोचर, अष्टवर्ग और दशा मे किसे कितना महत्व दे ?

उत्तर : फल प्राप्ति का मुल तो जन्मकालीन ग्रहस्थिति ही है। ग्रह यदि राथ्यादि स्थिति मे कमजोर हो तो उसकी दी हुई रेखाए भी कमजोर फल ही देती है।

कुंडली मे दशा का फल आधारित है। दशा के फल मे दशापति की अधिक A-V रेखाओं मे शुभता बढाती है और दशा मे गोचर भी शुभ आ जाए तो उत्तम फल होते है।

कहा गया है कि जो ग्रह गोचर मे उत्तम होकर भी A-V मे मध्यम हो और दशा के लिहाज से खराब हो तो उसका फल दशा के दौरान बहुत ही खराब होता है।

तालिका मे स्पष्ट है

दशा	A-V	गोचर	परिणाम
उत्तम	उत्तम	उत्तम	सर्वोत्तम
उत्तम	उत्तम	मध्यम	उत्तम
उत्तम	मध्यम	अधम	मध्यम
मध्यम	उत्तम	उत्तम	मध्यम
मध्यम	मध्यम	मध्यम	मध्यम
अधम	मध्यम	उत्तम	अधम
अधम	मध्यम	उत्तम	अधम
अधम	अधम	अधम	अधमा धम

संकलन : **हिमांशु आर. ओझा**

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

RESULT

VEDIC JYOTISH PRAVESH

No.	*Name of the Student*	*Class*	*Marks*
1	SUBHANGI S MANDOLKAER	DISTINCTION	79
2	BHUVANESH A SATAM	DISTINCTION	76
3	SAPNA M THAKUR	DISTINCTION	76
4	VINOD R SIDHPURA	DISTINCTION	76
5	AMISHI R DOSHI	DISTINCTION	75
6	NISHIT J PAREKH	DISTINCTION	75
7	RADHIKA D SHETH	DISTINCTION	75
8	URVASHI Y THAKKAR	DISTINCTION	75
9	VIKASH P VADGAMA	DISTINCTION	74
10	HETA V VADGAMA	DISTINCTION	73
11	HITESH K PITHADIA	DISTINCTION	73
12	MEENA R SHUKLA	DISTINCTION	73
13	RUPA V SHAH	DISTINCTION	72
14	DEEPAK K RAVAL	DISTINCTION	71
15	CHITRA B DAMANI	FIRST	70
16	HARIKESH L PATHAK	FIRST	70
17	RAJKUMARI H SHARMA	FIRST	70
18	JYOTSANA R PATEL	FIRST	69
19	AKHILESH B VISHWAKARMA	FIRST	68
20	DHAVAL H LAKHANI	FIRST	68
21	ARJUN R KATWA	FIRST	67
22	HEMANT C SHAH	FIRST	66
23	NARESH B PARMAR	FIRST	66
24	VINAYAK K NAWALE	FIRST	66
25	DHAWAL P RAJGOR	FIRST	65
26	URMILA M KOCHIKAR	FIRST	65
27	RESHMA D SHAH	FIRST	64
28	SANTOSH R BANIYA	FIRST	64
29	GAJANAN B KULKARNI	FIRST	63
30	SARANG B DAMUDRE	FIRST	63
31	VILAS R PARMAR	FIRST	63
32	ZALAK A LIMBACHIYA	FIRST	63
33	GOWRI B KHANDARE	FIRST	62
34	NARESH PANCHAL	FIRST	62
35	PAYAL V PARMAR	FIRST	62
36	ANIL J PATHAK	FIRST	61
37	BALMUKUND D DAGA	FIRST	61
38	RUPAL N DOSHI	SECOND	58

કોઈ પણ ભાષા માતાના પ્રેમ અને માતૃત્વની તાકાતને શબ્દોમાં વર્ણવી શકતી નથી.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

RESULT

VEDIC JYOTISH PRAVESH

No.	Name of the Student	Class	Marks
39	CHIRAG R MEHTA	SECOND	57
40	FORAM M GALA	SECOND	57
41	KASHYAP M PARMAR	SECOND	57
42	MADHVI D JOSHI	SECOND	57
43	NEHA H KAPADIA	SECOND	57
44	DINA J VIRA	SECOND	56
45	DEEPAK V RAVAL	SECOND	55
46	PARUL M PATEL	SECOND	55
47	MAMTA H MEHTA	SECOND	50
48	HIRAL R AJMERA	SECOND	49
49	RINKU K CHAUHAN	SECOND	49

RESULT

VEDIC JYOTISH BHUSHAN

No.	Name of the Student	Class	Marks
1	MAHESHKUMAR D PARMAR	DISTINCTION	87
2	AJAY S PARMAR	DISTINCTION	85
3	VANDANA S MISHRA	DISTINCTION	85
4	MOHIT A SHAH	DISTINCTION	83
5	URMISH P DESAI	DISTINCTION	83
6	JAYSING A KHAMKAR	DISTINCTION	82
7	ANITA M DHAKAN	DISTINCTION	80
8	JIGNA J VORA	DISTINCTION	79
9	ANISHA M SONI	DISTINCTION	78
10	KRUNNAL C PARMAR	DISTINCTION	78
11	NIKHIL J KOTHARI	DISTINCTION	78
12	JATIN R DESAI	DISTINCTION	77
13	KEDARNATH K MODI	DISTINCTION	77
14	RAJEN R VYAS	DISTINCTION	77
15	HEMRAJ P ZAWARE	DISTINCTION	76
16	KAUSHIK N DAVE	DISTINCTION	76
17	MAMTA D KAMDAR	DISTINCTION	75
18	VIRAL V SHAH	DISTINCTION	75
19	AMITA M NAIK	DISTINCTION	74
20	DEVANG B DAMANI	DISTINCTION	74
21	JITENDRA K PANCHAL	DISTINCTION	74
22	DEVEN D SHAH	DISTINCTION	73

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

RESULT

VEDIC JYOTISH BHUSHAN

No.	*Name of the Student*	*Class*	*Marks*
23	HARIOM SUKLA	DISTINCTION	72
24	KETAKI B GALA	DISTINCTION	72
25	YASHVI PANCHAL	DISTINCTION	72
26	SARIKA R SONI	DISTINCTION	72
27	POURUSH B GUTTA	FIRST	70
28	KAJAL A THAKKAR	FIRST	69
29	MANOJ A MEHTA	FIRST	69
30	SWATANTRAKUMAR MISHRA	FIRST	69
31	DHANRAJ P BHADARK	FIRST	68
32	VIRAL B GANDHI	FIRST	68
33	BHADRESH K SHAH	FIRST	66
34	JIGNASHA N PARIKH	FIRST	66
35	NUTAN I SHAH	FIRST	66
36	BHAVIK J SANCHALA	FIRST	64
37	CHHAYA V CHHEDA	FIRST	64
38	DISHA D MANDAVIA	FIRST	64
39	HEMLATA H MUDLIAR	FIRST	62
40	GUNJAN R SACHDEV	SECOND	56
41	KEVAL H SHAH	SECOND	56
42	NILAM B SANCHALA	SECOND	56
43	MADHAVI D KAPSE	SECOND	55
44	GULSHAN D MEHRA	SECOND	54
45	RITA N SHAH	SECOND	54
46	ARVIND R YADAV	SECOND	53
47	RAJIV M BANSAL	SECOND	48
48	VIJAYAN NAMBIAR	SECOND	48

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

RESULT

VEDIC JYOTISH MARTAND

No.	*Name of the Student*	*Class*	*Marks*
1	NIRMALA K VYAS	FIRST	69
2	NEETA D MAHYAVANSHI	FIRST	67
3	SONAL G JOSHI	FIRST	66
4	HEENA C CHHEDA	FIRST	63
5	SONY R CHIMNANI	FIRST	63
6	POOJA M VORA	FIRST	62
7	POONAM G JAIN	FIRST	62
8	RADHESYAM G KUMAVAT	FIRST	62
9	KSHITIJ B DAVE	FIRST	61
10	SNEHAL V SHAH	FIRST	61
11	TINA J PANDIT	FIRST	61
12	LATA J JAIN	SECOND	60
13	POONAM O YADAV	SECOND	60
14	HIMANSHU J JOSHI	SECOND	59
15	CHETANA H PARMAR	SECOND	58
16	ALPA R SHAH	SECOND	57
17	PRITI F SHAH	SECOND	57
18	SHEELA V KATHEEH	SECOND	56
19	YOGESH B POPAT	SECOND	56
20	DEEPAK N RANE	SECOND	55
21	MAMTA R SHARMA	SECOND	55
22	SONAL N CHIKANI	SECOND	55
23	KHYATI K VORA	SECOND	54
24	AVINASH B BHAGALIA	SECOND	52
25	MEENA N SHAH	SECOND	50
26	INDIRA S ACHARYA	SECOND	45

જે વ્યક્તિ અત્યંત કાર્યવ્યસ્ત રહે છે તે કદી પણ દુઃખી થતી નથી. એ વ્યક્તિ સદાય સુખી રહે છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

RESULT

VEDIC VASTU PRAVESH

No.	*Name of the Student*	*Class*	*Marks*
1	AJAY S PARMAR	DISTINCTION	71
2	NISHIT J PAREKH	FIRST	68
3	AMISHI R DOSHI	FIRST	62
4	SAPNA M THAKUR	FIRST	61
5	RESHMA D SHAH	SECOND	58
6	SANTOSH R BANIYA	SECOND	58
7	SARANG B DAMUDRE	SECOND	58
8	SUBHANGI S MANDOLKAER	SECOND	58
9	URMILA M KOCHIKAR	SECOND	58
10	AKHILESH B VISHWAKARMA	SECOND	57
11	NEHA H KAPADIA	SECOND	57
12	FORAM M GALA	SECOND	56
13	HEMANT C SHAH	SECOND	56
14	RUPESH S DOSHI	SECOND	56
15	JAYSHRI V GALA	SECOND	55
16	GAJANAN B KULKARNI	SECOND	54
17	RUPAL N DOSHI	SECOND	52
18	MEENA R SHUKLA	SECOND	51
19	DHAWAL P RAJGOR	SECOND	49
20	HARIKESH L PATHAK	SECOND	49
21	BALMUKUND D DAGA	SECOND	48
22	HONEY N GALA	SECOND	47
23	VINAYAK K NAWALE	SECOND	47
24	KEVAL H SHAH	SECOND	44
25	VARSHA N SUTARYA	SECOND	41
26	RINKU K CHAUHAN	PASS	40
27	ANIL J PATHAK	PASS	39
28	MAMTA H MEHTA	PASS	39
29	GOWRI B KHANDARE	PASS	38
30	HIRAL R AJMERA	PASS	38
31	KASHYAP M PARMAR	PASS	36

જે પોતાની જાતને સુખી માનતો નથી, તે ક્યારેય સુખી હોતો નથી.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

RESULT

VEDIC VASTU BHUSHAN

No.	*Name of the Student*	*Class*	*Marks*
1	DEVANG B DAMANI	DISTINCTION	85
2	URMISH P DESAI	DISTINCTION	83
3	AJAY S PARMAR	DISTINCTION	82
4	MAHESHKUMAR D PARMAR	DISTINCTION	81
5	JIGNASHA N PARIKH	DISTINCTION	79
6	VIRAL V SHAH	DISTINCTION	79
7	DAXA V KATELIA	DISTINCTION	74
8	MAMTA D KAMDAR	DISTINCTION	74
9	NUTAN I SHAH	DISTINCTION	74
10	SARIKA R SONI	DISTINCTION	74
11	JIGNA J VORA	DISTINCTION	73
12	JATIN R DESAI	DISTINCTION	72
13	KAUSHIK N DAVE	DISTINCTION	72
14	KRUNNAL C PARMAR	DISTINCTION	71
15	DISHA D MANDAVIA	FIRST	70
16	JAYSING A KHAMKAR	FIRST	68
17	MADHAVI D KAPSE	FIRST	64
18	SANSKRUTI S GOLE	FIRST	64
19	KRUPA M UTEKAR	FIRST	63
20	SWATANTRAKUMAR MISHRA	FIRST	63
21	KEDARNATH K MODI	FIRST	61
22	HEENA C CHHEDA	SECOND	59
23	VANDANA S MISHRA	SECOND	59
24	BHADRESH K SHAH	SECOND	57
25	VINOD R TELI	SECOND	57
26	ANITA M DHAKAN	SECOND	56
27	CHHAYA V CHHEDA	SECOND	55
28	HEMRAJ P ZAWARE	SECOND	54
29	DHANRAJ P BHADARK	SECOND	52
30	SWETA S SHYAMSUNDER	SECOND	52
31	HARIOM SUKLA	SECOND	51
32	ARVIND R YADAV	SECOND	49
33	VIJAYAN NAMBIAR	SECOND	45
34	GUNJAN R SACHDEV	PASS	40
35	ALKA R VARDE	PASS	38
36	RITA N SHAH	PASS	37

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

RESULT

VEDIC SWARGYAN GNYATA

No.	Name of the Student	Class	Marks
1	VANDANA S MISHRA	DISTINCTION	80
2	AJAY S PARMAR	DISTINCTION	77
3	CHHAYA P SHAH	DISTINCTION	77
4	KAUSHIK N DAVE	DISTINCTION	77
5	MAMTA D KAMDAR	DISTINCTION	77
6	AMITA M NAIK	DISTINCTION	74
7	GUNJAN R SACHDEV	DISTINCTION	74
8	HEMRAJ P ZAWARE	DISTINCTION	74
9	JAYSING A KHAMKAR	DISTINCTION	74
10	KEDARNATH K MODI	DISTINCTION	74
11	KRUPA M UTEKAR	DISTINCTION	74
12	MAHESHKUMAR D PARMAR	DISTINCTION	74
13	MOHIT A SHAH	DISTINCTION	74
14	NIKHIL J KOTHARI	DISTINCTION	74
15	RAJEN R VYAS	DISTINCTION	74
16	SANSKRUTI S GOLE	DISTINCTION	74
17	SARIKA R SONI	DISTINCTION	74
18	VIRAL V SHAH	DISTINCTION	74
19	ANITA M DHAKAN	DISTINCTION	71
20	BHAVIK J SANCHALA	DISTINCTION	71
21	CHHAYA V CHHEDA	DISTINCTION	71
22	DISHA D MANDAVIA	DISTINCTION	71
23	JIGNASHA N PARIKH	DISTINCTION	71
24	JITENDRA K PANCHAL	DISTINCTION	71
25	NUTAN I SHAH	DISTINCTION	71
26	VINOD R TELI	DISTINCTION	71

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

RESULT

VEDIC SWARGYAN GNYATA

No.	Name of the Student	Class	Marks
27	DAXA V KATELIA	FIRST	68
28	DEVEN D SHAH	FIRST	68
29	MADHAVI D KAPSE	FIRST	68
30	SWETA S SONI	FIRST	68
31	URMISH P DESAI	FIRST	68
32	JATIN R DESAI	FIRST	65
33	JIGNA J VORA	FIRST	65
34	KRUNNAL C PARMAR	FIRST	65
35	ALKA R VARDE	FIRST	62
36	BHADRESH K SHAH	FIRST	62
37	DEVANG B DAMANI	FIRST	62
38	DHANRAJ P BHADARK	FIRST	62
39	GULSHAN D MEHRA	FIRST	62
40	KAJAL A THAKKAR	FIRST	62
41	HETAL B GOHIL	SECOND	59
42	KETAKI B GALA	SECOND	56
43	RAJIV M BANSAL	SECOND	56
44	YASHVI PANCHAL	SECOND	56
45	ANISHA M SONI	SECOND	53
46	HARIOM SUKLA	SECOND	53
47	HEMLATA H MUDLIAR	SECOND	53
48	SWATANTRAKUMAR MISHRA	SECOND	52
49	ARVIND R YADAV	SECOND	50
50	NILAM B SANCHALA	SECOND	50
51	RITA N SHAH	SECOND	50
52	VIJAYAN NAMBIAR	SECOND	41

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

RESULT

VEDIC HASTREKHA VIGNYATA

No.	*Name of the Student*	*Class*	*Marks*
1	CHITRA B DAMANI	DISTINCTION	95
2	NISHIT J PAREKH	DISTINCTION	94
3	ZALAK A LIMBACHIYA	DISTINCTION	90
4	BHUVANESH A SATAM	DISTINCTION	86
5	FORAM M GALA	DISTINCTION	85
6	HEMANT C SHAH	DISTINCTION	85
7	NEHA H KAPADIA	DISTINCTION	80
8	JYOTSANA R PATEL	DISTINCTION	79
9	VILAS R PARMAR	DISTINCTION	79
10	AMISHI R DOSHI	DISTINCTION	77
11	MADHVI D JOSHI	DISTINCTION	77
12	SUNIL G DANDULIYA	DISTINCTION	77
13	ANIL J PATHAK	DISTINCTION	76
14	URVASHI Y THAKKAR	DISTINCTION	76
15	RESHMA D SHAH	DISTINCTION	75
16	MEENA R SHUKLA	DISTINCTION	74
17	URMILA M KOCHIKAR	DISTINCTION	74
18	VINOD R SIDHPURA	DISTINCTION	74
19	CHIRAG R MEHTA	DISTINCTION	73
20	HETA V VADGAMA	DISTINCTION	71
21	PARUL M PATEL	FIRST	70
22	SAPNA M THAKUR	FIRST	70
23	DEEPAK V RAVAL	FIRST	69
24	DHAVAL D RAJGOR	FIRST	69
25	RUPA V SHAH	FIRST	69
26	PAYAL V PARMAR	FIRST	68
27	RADHIKA D SHETH	FIRST	68
28	SUBHANGI S MANDOLKAER	FIRST	68
29	VINAYAK K NAWALE	FIRST	68
30	DEEPAK K RAVAL	FIRST	67
31	ARJUN R KATWA	FIRST	66

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

RESULT

VEDIC HASTREKHA VIGNYATA

No.	*Name of the Student*	*Class*	*Marks*
32	HITESH K PITHADIA	FIRST	66
33	SANTOSH R BANIYA	FIRST	66
34	DHAVAL H LAKHANI	FIRST	64
35	RAJKUMARI H SHARMA	FIRST	64
36	GAJANAN B KULKARNI	FIRST	63
37	GOWRI B KHANDARE	FIRST	63
38	RUPAL N DOSHI	FIRST	62
39	HARIKESH L PATHAK	FIRST	61
40	KASHYAP M PARMAR	FIRST	61
41	VIKASH P VADGAMA	FIRST	61
42	RINKU K CHAUHAN	SECOND	60
43	BALMUKUND D DAGA	SECOND	58
44	NARESH B PARMAR	SECOND	57
45	SARANG B DAMUDRE	SECOND	57
46	MAMTA H MEHTA	SECOND	48
47	AKHILESH B VISHWAKARMA	SECOND	47
48	DINA J VIRA	PASS	40

વખાણના ભૂખ્યા માનવીઓ એ સાબિત કરી દે છે કે તેઓ યોગ્યતામાં કંગાળ છે.

आकाश दर्शन

(तारा दर्शन – २०२५)

आकाश ... पृथ्वी पर मौजुद हम इंसानों को कुदरत द्वारा दी गई एक अनोखी उपोब्धि है जिसे अधिकांश लोग अक्सर नजर अंदाज कर देते है ... पर क्या आप जानते है कि इस इतने अनोखे कुदरत की भेंट में भी अपने ही अनगिनत राझ छुपे है ... जिन्होनें सालों पहले के राजा महाराजाओं और ज्ञानियों को ही नहीं, बल्कि आज के मौजूदा वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं को भी आश्चर्यचकित और अचंबित किया हुआ है और अभी भी कर रहे हैं।

किसी भी बडे से बडे रहस्य को समझने के लिए जरुरत होती है एक छोटे से पहले कदम को बढ़ाने की, और यही पहला कदम उठाने का मौका मुझे मिला आचार्य श्री अशोक सर की संस्था वैदिक ज्योतिष संस्थान के द्वारा। मुझे २०२० में पहली बार मेरे पिताजी के साथ इस संस्था द्वारा आयोजित तारा दर्शन के कार्यक्रम का हिस्सा लेते आ रहा हूं और अपने आकाश की समझ को बढ़ा रहा हूं।

यह कार्यक्रम हर वर्ष संस्था द्वारा आयोजि किया जाता है, इसकी सबसे अच्छी बात ये है कि कोई भी व्यक्ति जो आकाश, सितारों, ग्रहों, नक्षत्रों की जानकारी प्राप्त करना चाहता है वो इस कार्यक्रम में सम्मिलित हो सकता है।

इस वर्षन भी १ मार्च, २०२५ को इस कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसका कई लोगों को पिछले वर्ष से ही इंतजार था .... तो इस वर्षभी हम लोग दोपहर १ बजे बोरीवली के आनंदीबाई काले कॉलेज पहूंच गए। धीरे-धीरे छात्र, उनके परिवार के सदस्य, दोस्त और जिज्ञासु वहां जमा होने लगे। संस्था द्वारा ए.सी. बसों का प्रबंध किया गया था। हम लोगों ने बस मे प्रवेश किया। थोड़ी देर में संस्था के स्वयंसेवकों ने बसो में नाश्ते के पैकेट बांटे और हम अपने सफर के लिए रवाना हो गए।

उस दिन कडाके की गर्मी पड़ रही थी पर ए.सी.बसने थकने नहीं दिया। बस में हमने ज्योतिष और आकाश के विषयों पर बातचीत की, देखते ही देखते ५:३० बज गए और हम लोग महाराष्ट्र के वाडा के पहाड़ों में बसे सूर्यामॉल कैंप हिप्पी हिल्स रिसॉर्ट में पहुंचे। उत्साह की कमी तो वैसे भी नहीं थी और जोश दुगुना हो उठा अब उतरते ही हमें गरम गरम चाय और नाश्ता मिला।

वहां कुछ टैंट लगे हुए थे, कुछ लग रहे थे। टेलीस्कोप सेट हो रहे थे। संध्या के समय वो वीरान सा रिसॉर्ट जैसे जी उठा था। कोई टेंट बुक कर रहा था, कुछ लोग नाश्ता करवा रहे थे, कुछ टेलीस्कोप सेट कर रहे थे तो कुछ बड़े परदे, प्रोजेक्टर, ऑडियो सिस्टम को सेट कर रहे थे। देखते ही देखते कार्यक्रम की शुरुआत हुई।

खगोल विज्ञान की विशेषज्ञ पूर्णा व्यास मैडम ने हमें आकाश देख कर, किसी भी स्थान से उत्तर दिशा और बाकी दिशाएं कैसे ज्ञात की जाती हैं ये बताया। हमें सूर्य, चंद्रमा, पृथ्वी और बाकी ग्रह किस तरह आकाश में हैं और किस तरह सभी ग्रह सूर्य का चक्कर लगाते हैं ये बताया गया साथ ही हमें इनकी सूर्य से दूरी बताई गई।

धीरे-धीरे अँधेरा होने लगा और जिस आसमान में मुंबई में टेरस पर कुछ ही तारे दिखते हैं, वही आकाश हमें वीरान इलाके में पहाड़ों की ऊँचाई से देखने पर सितारों से जगमगाता दिखाई देने लगा। हमने North Star के बारे में जाना, सप्त ऋषि, अरुंधति वशिष्ठ, गेटवे ऑफ हेवन, नेबुला और इंग्लिश कैलेंडर के कॉन्सेप्ट के साथ हमारे हिंदू कैलेंडर के महिनो के नाम और उनसे जुड़े नक्षत्रों के संबंध को जाना। ये भी पता चला कि तिथि मात्र एक अंक नहीं बल्कि एक एसा डेटा है जो सूर्य और चंद्रमा के बीच की दूरी का अंतर बताता है।

हमने जाना कि कैसे सितारों की मदद से भी दिशा पहचानी जा सकती है। हमने बृहस्पति और उसके चंद्रमाओं को और मंगल को दूरबीन से देखा साथ ही और भी कई सारी वस्तुएं जैसे Nebula Globular Star Cluster, चंद्रमा, शुक्र, बुध, अरुंधति वशिष्ठ, को भी दूरबीन से देखा।

प्रोजेक्टर पर सर ने लाइव स्काई मैप लगाया हुआ था जिसमें उदित ओर अस्त होते सितारे और राशियां हम अपने ऊपर के आकाश के साथ मिला रहे थे। हमने क्षितिज के कॉन्सेप्ट को जान और सितारों की उन पौराणिक कहानियों और किरदारों को जान, जिनका उल्लेख दुनिया के अलग-अलग देशों/धर्मों के पौराणिक ग्रंथों में मिलता है। समय का तो जैसे आभास ही नहीं हो रहा था। कभी हम टेलिस्कोप से देखने के लिए लाइन लगाते थे, तो कभी कॉन्सेप्ट को जानने एक्सपॅर्ट्स के ईर्द-गिर्द हो जाते, तो कभी ऊपर आकाश को देखते तो कभी एक्सपर्ट के डेमोंस्ट्रेशन को तो कभी स्क्रीन पर लगे स्काई मेप या फिर प्रेजेंटेशन को।

समय का बोध तब हुआ जब हमसे कहा गया कि डिनर तैयार हो चुका है। हम लोग डिनर करने के लिए डाइनगिं एरिया मे पहुंचे। वहां भी सर ओर उनकी टीम हमारी शंकाओं का समाधान कर रही थी, प्रश्नों के उत्तर दे रही थी। डिनर की बात चल ही गई है तो अब क्या कहूं। संस्था ने इस बार भी अपने साथ कैटरर का इंतेजाम किया था। डिनर में गरमा गरम परांठे, सब्जी, पुलाव, कोशांबी, दूधी केहलवे ने हमारी ना सिर्फ भूख मिटाई, बाकी के कार्यक्रम के लिए ताजगी और ऊर्जा भी प्रदान की।

फिर से कार्यक्रम शुरू हुआ ओर हमें अधिक जानकारी दी गई। विसेषज्ञ हमारे संदेह भी हल कर रहे थे और नए कॉन्सेप्ट बता रहे थे।

इस बार कुछ नई चुनौतियों से सामना हुआ-आसमान में बादल अचानक ही आ जाते और अचानक ही छंट जाते, रात काफी बीत चुकी थी तभी अचानक वहां की बिजली गुल हो गई। प्रोजेक्टर और स्पीकर बंद हो गए और सिर्फ खुले आकाश के नीचे हमें जानकारी दी जा रही थी, और जैसे अब खुद ईश्वर को हमारी परीक्षा लेनी थी, आकाश में घने बादल छा गए, ठंड बढ़ने लगी, जिन्होनें टेंट लिए वो उनमे चले गए। कुछ समय के लिए कार्यक्रम थम सा गया तब हमने समूह में सामान्य चर्चा की और तभी सर के एक छात्र ने बांसुरी की मधुर ध्वनि में कुछ धुनें बजाई और दूसरे दो छात्रों ने हमें अंधेरी रात्रि में फिलमी गाने सुनाये ओर सभी को जगाया रखा।

इतने में ही बिजली फिर आ गई और बादल भी धीरे धीरे छंटने लगे, प्रोजेक्टर फिर से शुरु हो गया और प्रजेंटेशन के जरिये हमने जाना कि हम इंसान मिथ्या ही खुद को बड़ा मानते हैं। जबकी हम और हमारी पृथ्वी तो अंतरिक्ष के बाकी पिंडो की तुलना में तो एक पेंसिल की नोक के बराबर भी नहीं हैं। हमने अंतरिक्ष की कई सारी तस्वीरे देखी।

धीरे-धीरे सूर्योदय हुआ और सर के टेलिस्कोप पर सोलर फिल्टर लगाकर हमें टेलिस्कोप द्वारा सूर्य दिखाया गया इस बार हमें सूर्य के धब्बे (Sun Spots) देखने को मिले। हमने सुबह की चाय और नाश्ता किया और फिर से बोरीवली की और रवाना होने के लिए हम बस में बैठ गए। हमने अपने यहां पर सितारों की पहचान करने की प्रैक्टिस के लिए अशोक सर से स्टार चार्ट खरीदा।

सच कहूं तो हर साल इस कार्यक्रम में कुछ न कुछ नया सीखने को मिलता है और हर साल नए सवाल भी खड़े हो जाते हैं और फिर इंतजार रहता है कि वापस आकाश दर्शन का कार्यक्रम कब होगा ? कब हमें फिरसे एक्सपर्ट्स द्वारा और गहरा ज्ञान मिलेगा ? कब हमें आशीष भैया की कैटरिंग टीम के हाथ का जायकेदार खाना मिलेगा ? कब हमें आकाश गंगा के और उन पृथ्वी केचक्कर लगाते सैटेलाईट्स के दर्शन होंगे ?

वैसे इस साल का तारादर्शन तो हो चुका... आप भी तैयार हो जाइए और इंतजार किजिए अगले तारादर्शन का।

धन्यवाद...

- कैदारनाथ कुड़ीमल मोदी

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

तारा दर्शन की झलकियाँ

હે પ્રભુ તુ મને એવી શક્તિ આપ કે મારા અસ્ત સુધી વ્યસ્ત રહું મસ્ત રહું અને જબરજસ્ત રહું...!!

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

YOG DIVAS

આધ્યાત્મિક વિકાસ એ જ આપણા પૃથ્વી પરના જીવનનો ખરો હેતુ છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

ગુરુપુર્ણિમા મહોત્સવ ૨૦૨૪

સમસ્યા એ તમારી સ્ટોપ લાઇન નથી પણ આગળ વધવાની ગાઇડ લાઇન છે.